बाइबल की दृष्टि से स्त्री और पुरुष की समानता

Philip B. Payne

2015 / 2023

अंग्रेज़ी से जर्मन में अनूदित

जर्मन अनुवाद: Hans-Jörg Ronsdorf

Philip Barton Payne की कृपापूर्ण अनुमति से

प्रूफ़-संशोधन (जर्मन संस्करण): Wolfgang Klöckner

Sulzberg, अक्टूबर 2026

दूसरा, संशोधित संस्करण (पहला संस्करण जुलाई 2023)

ई-मेल से मँगवाएँ

hj-ronsdorf@t-online.de

टेलीफ़ोन: 08376 929643

प्रति पुस्तिका मूल्य 3.80 यूरो, डाक-व्यय अतिरिक्त

www.hans-joerg-ronsdorf.de

ISBN 978-3-9820715-8-9

विषय-सूची

1 प्रस्तावना

क्या यह आश्चर्य की बात नहीं कि 21वीं सदी में भी अपने विश्वास-अंगीकार पर दृढ़ और बाइबल के प्रति निष्ठावान मसीहियों के बीच इस विषय पर अब भी भावुक बहस होती है कि परमेश्वर के राज्य में, समाज में, परिवार और विवाह में लिंग से कोई अंतर पड़ता है या नहीं? इतनी तीखी बहस, कि कोई सोच सकता है कि बात सुसमाचार के किसी मुख्य सत्य या पवित्रशास्त्र के अधिकार की है। पहले यह स्पष्ट कर दें: पुरुष और स्त्री निश्चित रूप से भिन्न हैं। इसमें कोई प्रश्न नहीं। पर यह स्पष्ट करना है: क्या स्त्री की तुलना में पुरुष को अगुवाई का या प्राथमिकता का स्थान प्राप्त है? और क्या इससे यह निकलता है कि स्त्रियाँ न तो पुरुषों को और न ही कलीसियाओं को शिक्षा दे सकती हैं और न उनकी अगुवाई कर सकती हैं?

तथ्य यह है: चर्चों और कलीसियाओं का इस विषय से लगातार सामना होता है – अर्थात् हर उस समय जब स्त्रियाँ और पुरुष एक साथ आते हैं। इस अर्थ में यह विषय गौण नहीं है। कुछ लोगों के लिए अगुवाई और शिक्षा देने का अधिकार पुरुषों के पास है। दूसरों के लिए इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि किसी का लिंग क्या है। एक ही कलीसिया में दोनों दृष्टिकोणों पर चलना कठिन है या बिलकुल संभव नहीं। इसलिए हमें फिर से बाइबल के पाठों की ओर लौटना होगा। यद्यपि हम वहाँ पहले भी बहुत बार जा चुके हैं। फिर भी: आइए, एक और प्रयास करें।

फिलिप बी. पेन (Philip B. Payne), एक धर्मवैज्ञानिक और भाषाविद्, हमें पवित्रशास्त्र की एक छोटी यात्रा पर साथ ले चलते हैं। पवित्रशास्त्र ही था जिसने उन्हें इस विषय पर अपनी सोच बदलने को प्रेरित किया। पढ़िए, क्यों। उन्होंने इस विषय पर कई पुस्तकें लिखी हैं।[1] आपके हाथ में जो पुस्तिका है, उसमें एक लेख है जो 2015 में पत्रिका Priscilla Papers[2] में प्रकाशित हुआ था। इस जर्मन संस्करण के लिए लेखक की प्रस्तावना ("मेरी लंबी यात्रा") में कुछ नई खोजों की चर्चा है।

इस छोटी पुस्तक का शीर्षक स्पष्ट कर देता है कि इसमें किस पक्ष का प्रतिपादन किया गया है। यह समानतावादी सृष्टि-व्यवस्था का संक्षिप्त सार देती है: पुरुष और स्त्री को समान अधिकार हैं और वे समान ज़िम्मेदारी उठाते हैं। लिंगों की हर पदानुक्रमिक असमानता को बाइबल-विरुद्ध कहकर अस्वीकार किया जाता है, क्योंकि वह सुसमाचार के विरुद्ध है।

ध्यान देने योग्य बात यह है: अंग्रेज़ी-भाषी जगत में पिछले वर्षों में ऐसे पुरुषों की पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं जो पहले पुरुष और स्त्री के तथाकथित पूरकतावादी दृष्टिकोण को मानते थे (अंत में पुस्तकों की अनुशंसा देखिए)। यह दृष्टिकोण कहता है कि कलीसिया में केवल पुरुष ही अगुवाई कर सकते हैं और शिक्षा दे सकते हैं। पर इन लेखकों ने अब पूरकतावादी दृष्टिकोण को पूरी तरह छोड़ दिया है। उनके लिए बाइबल ही एकमात्र मापदंड है। उन्होंने यह नहीं पूछा कि आज के समाज को क्या पसंद आएगा या संस्कृति को कैसे खुश किया जाए। बल्कि उन्होंने बार-बार पवित्रशास्त्र से प्रश्न किए और उसकी खोजबीन की। उनका परिणाम एकमत था: बाइबल बिना किसी किंतु-परंतु के स्त्री और पुरुष की समानता की शिक्षा देती है। हर संबंध में। हर स्थान पर। हर समय। अदन का भेद यह था कि दोनों लिंग अपनी-अपनी भिन्न शक्तियाँ लाते हैं: हव्वा बराबरी के स्तर पर समान अधिकार वाली सहभागिनी के रूप में आदम में उस बात की पूर्ति करती है जिसकी उसमें कमी है। और निस्संदेह इसका उलटा भी।

समय आ गया है कि पुरुष और स्त्री के बीच ऊँच-नीच के क्रम में सोचना बंद किया जाए। यह सोच मसीही रंग में रंगी तो है, पर प्राचीन, सांसारिक संस्कृति से आती है – चाहे सदियों तक इसे बाइबल के सत्य के रूप में प्रस्तुत किया गया हो। मसीह में इसका अंतिम रूप से अंत हो चुका है। मसीह के द्वारा उद्धार की व्यवस्था ने मूल सृष्टि-व्यवस्था को पुनःस्थापित कर दिया है और प्राचीन काल से लेकर हमारे आज के समय तक के सब सामाजिक भेद-भावों का अंत कर दिया है। सदा के लिए। कलीसिया में, नई सृष्टि में, लिंगों का अंतर अब पक्षपात, अलगाव, ऊपर या नीचे रखे जाने का कारण नहीं है। यही बात दासों और स्वामियों के बीच या यहूदियों और ग़ैर-यहूदियों के बीच के अंतर पर भी लागू होती है। सब मनुष्य ठीक वही बने रहते हैं जो वे हैं। पर कलीसिया में इन विशेषताओं से अब कोई अंतर नहीं पड़ता – चाहे समाज में, संस्कृति और देश के अनुसार, दुर्भाग्य से कुछ हद तक अब भी पड़ता हो।

शायद आप एक बार बिना पूर्वाग्रह के फिलिप बी. पेन के विचारों का अनुसरण कर सकें – चाहे आप पूरकतावादी दृष्टिकोण रखते हों और उसके अनुसार जीते हों।

मैं भी उन लोगों में से हूँ जिन्हें कुछ वर्ष पहले अपना मत बदलना पड़ा। पवित्रशास्त्र के निरंतर और गहन अध्ययन के कारण। मैं यीशु से प्रेम करता हूँ, मैं बाइबल से प्रेम करता हूँ और लगभग 50 वर्षों से उसका अध्ययन कर रहा हूँ। मैंने अपने इस विकास को एक पुस्तक में लिखा है और एक वेबसाइट पर और सामग्री इकट्ठा की है, जिसे निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है: www.frauen-vergebt-uns.de

इससे पहले कि फिलिप बी. पेन बोलें: शायद ही कोई विषय इतनी अधिक और तीव्र भावनाएँ जगाता हो। हर एक परमेश्वर और उसके वचन के सामने "अपने ही मन में निश्चय कर ले" (रोमियों 14:5)। पर स्पष्ट है कि मामला इतना एकदम साफ़ नहीं है। कुछ स्थानों पर मान्यताएँ बनानी पड़ती हैं, और वे फिर एक या दूसरी दिशा में ले जाती हैं।

इसलिए सबके लिए यह अपील है कि वे तथ्यपरक रहें, सुनें, सोचें, तर्कों का अच्छा आधार दें और जहाँ धूसर है – अर्थात् स्पष्ट नहीं – वहाँ काला-सफ़ेद न सोचें। हमें पवित्रशास्त्र की संपूर्ण गवाही से दिशा लेनी चाहिए, केवल दो या तीन पदों से नहीं।

वह दिन आ रहा है जब हम इस विषय का सत्य अपने उद्धारकर्ता और परमेश्वर के मुँह से सुनेंगे। मैं उसकी बाट जोहता हूँ। तब हमें स्वयं भी लेखा देना होगा। जो बात तब ग़लत सिद्ध होगी, उसे हम फिर सुधार नहीं सकेंगे।

Hans-Jörg Ronsdorf, ऑग्सबर्ग (Augsburg), जून 2023

2 मेरी लंबी यात्रा

जिस कलीसिया में मैं बड़ा हुआ, उसकी अगुवाई केवल पुरुष करते थे। पर मेरी मुख्य चिंता यह थी कि क्या मुझे अनंत जीवन मिलेगा। जब मैंने कैलिफ़ोर्निया के माउंट हर्मन (Mount Hermon) में रेडवुड कैंप (Redwood Camp) में अपने युवा-अगुवे के सामने यह मान लिया, तो उन्होंने मुझसे यूहन्ना 3:16 पढ़ने को कहा और फिर पूछा कि क्या मैं यीशु पर विश्वास करता हूँ। मैंने कहा: "हाँ।" फिर उन्होंने पूछा: "क्या तुम्हें अनंत जीवन मिलेगा?" मैंने उत्तर दिया: "यही तो समस्या है। मैं नहीं जानता।" उन्होंने कहा: "इसे फिर से पढ़ो।" फिर वही दो प्रश्न आए और मेरे वही दो उत्तर। उन्होंने फिर कहा: "इसे फिर से पढ़ो।" इस बार आख़िरकार मेरी समझ में आया: "जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नष्ट न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए" – यह परमेश्वर की एक प्रतिज्ञा है। मैंने घुटने टेके और प्रार्थना की: "पिता, मुझे क्षमा कर कि तेरी प्रतिज्ञा पर विश्वास न करके मैंने तुझे झूठा ठहराया।" मैं विश्वास की निश्चितता के आनंद से भर गया, जिसने मुझे कभी नहीं छोड़ा, क्योंकि वह उस परमेश्वर की प्रतिज्ञा पर आधारित है जो झूठ नहीं बोल सकता (तीतुस 1:2)। मैंने जल्दी ही सीख लिया कि यह कितना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर का लिखित वचन सत्य और भरोसेमंद है।

फ़्रांस में ऑपरेशन मोबिलाइज़ेशन (Operation Mobilisation, OM) के साथ अपने समय में मैंने देखा कि कैसे जोएल (Joel) नाम का एक अंधा लड़का यीशु पर भरोसा करने पर आनंद से बदल गया। चिकित्सा की पढ़ाई करने के बजाय मैं मिशन संस्था TEAM (The Evangelical Alliance Mission) के साथ 14 महीनों के लिए जापान गया। मेरे पास्टर, काशिओका सेन्सेई (Kashioka Sensei), ने कहा कि जापान के सुसमाचारवादियों (इवैन्जेलिकल) को सबसे अधिक आवश्यकता किसी ऐसे व्यक्ति की है जिसके पास नए नियम विषय में डॉक्टरेट की उपाधि हो – और सबसे अच्छा, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से। इसलिए अमेरिका में ट्रिनिटी इवैन्जेलिकल डिविनिटी स्कूल (Trinity Evangelical Divinity School) में अपनी पढ़ाई के बाद मैंने कैम्ब्रिज में डॉक्टरेट का अध्ययन आरंभ किया। मेरे शोध-प्रबंध का विषय पवित्रशास्त्र की त्रुटिहीनता के विरुद्ध एक आपत्ति थी। यह वही एकमात्र आपत्ति थी जिसका उत्तर सेमिनरी में मेरे प्रशिक्षण ने मुझे नहीं दिया था: बोने वाले के दृष्टांत की व्याख्या विरोधाभासी लगती है, क्योंकि उसमें यह भी कहा गया है कि "बीज वचन है" और यह भी कि "ये वे हैं जो बोए जाते हैं"। मैंने खोजा कि यह प्रतीत होने वाली असंगति अरामी क्रिया "बोना" की एक ग़लतफ़हमी के कारण है। यूनानी में जो "बोया" जाता है, वह बीज है। अरामी में सामान्यतः भूमि बोई जाती है। इसलिए "ये वे हैं जो बोए जाते हैं" लोगों की तुलना उन अलग-अलग प्रकार की भूमियों से करता है जो बीज को ग्रहण करती हैं। "बोए गए" का यह प्रयोग दिखाता है कि बोने वाले के दृष्टांत की व्याख्या अरामी से यूनानी में अनुवाद की गई थी। इसलिए यह व्याख्या यूनानी-भाषी कलीसिया की गढ़ी हुई नहीं हो सकती, और इस प्रकार यह इस बात का प्रमाण है कि यह यीशु से ही आती है। यह खोज New Testament Studies 26 (1979-80), पृ. 564-568, में प्रकाशित हुई।

कैम्ब्रिज पहुँचने के कुछ ही समय बाद एक व्याख्याता ने दावा किया: "नए नियम का कोई भी स्थान, यदि उसे उसके मूल संदर्भ में समझा जाए, स्त्रियों की सेवा को सीमित नहीं करता।" मैं सोचता था कि 1 तीमुथियुस 2:12 स्त्रियों को पुरुषों को शिक्षा देने से मना करता है, और मैं लगभग चिल्ला पड़ा था: "यह सच नहीं है!" उस रात मैंने तीमुथियुस की पहली पत्री यूनानी में पढ़ी और यह प्रमाण खोजने का प्रयास किया कि वे ग़लत हैं। पर एक महीने से अधिक समय तक बार-बार यूनानी में पत्री पढ़ने के बाद मुझे स्पष्ट हो गया: इस पत्री का लगभग हर वाक्य उन समस्याओं से संबंधित है जिनका उल्लेख पहले खंड में झूठे शिक्षकों के विषय में किया गया है। इसके अतिरिक्त, पत्री झूठे शिक्षकों के द्वारा बहकाए गए लोगों के रूप में केवल स्त्रियों का नाम लेती है। इस विशेष परिस्थिति में यह पूरी तरह समझ में आता है कि पौलुस स्त्रियों को शिक्षा देने का अधिकार हथियाने से मना करता है। 1 तीमुथियुस 2:12 के शब्द और उसका ऐतिहासिक संदर्भ ठीक उन निर्देशों से मेल खाते हैं जो उस संकट के लिए थे जो उस समय इफिसुस की कलीसिया में चल रहा था।

यदि 1 तीमुथियुस 2:12 को स्त्रियों के लिए पुरुषों को शिक्षा देने का एक सामान्य निषेध समझा जाए, तो इसे पवित्र-शास्त्र के बाकी भाग से – विशेषकर पौलुस की पत्रियों से – मेल बैठाना अत्यंत कठिन है। पौलुस बार-बार "स्त्रियों", "सब" या "जो कोई" को शिक्षा देने या भविष्यद्वाणी करने की आज्ञा देता है (1 कुरिन्थियों 11:5; 14:5, 24, 26, 31, 39; कुलुस्सियों 3:16; 1 तीमुथियुस 3:1-2; तीतुस 2:3; 2 तीमुथियुस 2:2; तुलना कीजिए इब्रानियों 3:1, 12; 5:12)। पौलुस ऐसी बहुत-सी स्त्रियों की सराहना करता है जिन्होंने पुरुषों को शिक्षा दी (रोमियों 16:1-12; प्रेरितों के काम 18:1-7, 26), जिनमें यूओदिया, सुन्तुखे (फिलिप्पियों 4:2) और तीमुथियुस की नानी लोइस और माता यूनीके (2 तीमुथियुस 1:5) भी हैं, जिन्होंने तीमुथियुस को "बचपन से" पवित्रशास्त्र सिखाया (2 तीमुथियुस 3:15)। ऐसा कोई संकेत नहीं कि यह सिखाना कभी बंद हुआ। पौलुस के सहकर्मी लूका फिलिप्पुस की चार बेटियों के बारे में लिखते हैं जो भविष्यद्वाणी करती थीं (प्रेरितों के काम 21:8-9)। मत्ती 28:19-20 में यीशु की महान आज्ञा पूरी कलीसिया के लिए है (तुलना कीजिए लूका 24:33, 47-53), स्त्रियों के लिए भी और पुरुषों के लिए भी: "इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।" परमेश्वर ने ईश्वर-प्रेरित पवित्रशास्त्र को स्त्रियों के द्वारा भी प्रकट किया (निर्गमन 15:21; न्यायियों 5:2-31; 1 शमूएल 2:1-10; 25:24-31; नीतिवचन 31; लूका 1:25, 42-55)। यह सब दिखाता है: इस बात की संभावना बहुत कम है कि पौलुस ने 1 तीमुथियुस 2:12 को इस सामान्य नि-षेध के रूप में कहा हो कि कोई स्त्री किसी पुरुष को शिक्षा न दे – या कि पवित्र आत्मा ने इस पद को इस अर्थ में प्रेरित किया हो।

2.1 नई खोजों के चार उदाहरण

बाद में मैंने उन दूसरे स्थानों की भी जाँच की जिनके बारे में मेरा मानना था कि वे स्त्रियों की सेवा को सीमित करते हैं। इसमें पता चला कि उन्हें भी मैंने ग़लत समझा था। यहाँ चार उदाहरण हैं, जिनमें वे नई खोजें भी हैं जो मैंने 2015 के बाद की हैं, जब वह सारांश-लेख प्रकाशित हुआ जो इस पुस्तिका में आगे आता है:

1) 1 तीमुथियुस 2:15 यह शिक्षा नहीं देता कि स्त्रियाँ बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाती हैं। पिछले दो पदों में पौलुस उत्पत्ति 3:13 का हवाला देता है, जहाँ हव्वा के धोखा खाने और उसके पतन की बात है। इसके बाद उत्पत्ति 3:15 आता है: "स्त्री का वंश" साँप के सिर को कुचलेगा। 1 तीमुथियुस 2:15 में पौलुस पतन के विरुद्ध वही उपाय बताता है: "पर हर एक उस जन्म (tês teknogonias) के द्वारा (dia) उद्धार पाएगा।" उद्धार पहले के पतन वाले संकेत के स्पष्ट विपरीत है और आगे आने वाली शर्तों से पूरी तरह मेल खाता है: "यदि वे विश्वास, प्रेम और पवित्रता में बने

रहें"। केवल कर्ता "हर एक" ही एकवचन क्रिया ("उद्धार पाएगा") से बहुवचन ("यदि वे ... बने रहें") में परिवर्तन को समझाता है। पौलुस की पत्रियों में बाकी सब स्थानों पर "उद्धार करना" (sôzô) और उससे संबंधित शब्द आत्मिक उद्धार को दर्शाते हैं। 1 कुरिन्थियों 15:2 में पौलुस ठीक यही रचना (sôzô का कर्मवाच्य + dia + संबंधकारक) उद्धार का साधन बताने के लिए प्रयोग करता है: "सुसमाचार के द्वारा उद्धार पाया"। इसके अतिरिक्त: पौलुस से पहले के यूनानी साहित्य में teknogonia के तीनों प्रमाण किसी एक बच्चे के जन्म को दर्शाते हैं। कोई भी सामान्य रूप से बच्चे जनने को नहीं दर्शाता। "जन्म" के साथ उपपद (आर्टिकल) है। तीमुथियुस की पहली पत्री में इकसठ बार एकवचन संज्ञा से पहले उपपद आता है। इनमें से पचपन उपपद स्पष्ट रूप से किसी निश्चित, एकल वस्तु को दर्शाते हैं। केवल एक स्पष्ट रूप से सामान्य अर्थ में है (1 तीमुथियुस 4:8)। इसलिए "जन्म" को इस तरह समझना स्वाभाविक है कि वह किसी निश्चित जन्म की ओर संकेत करता है। कौन-सा जन्म उद्धार का साधन है? केवल यीशु का जन्म!

कुछ लोग पूछते हैं कि क्या किसी सामान्य पत्र के पाठक इस संकेत को समझ पाते, पर यह कोई सामान्य पत्र नहीं है। पौलुस ने यह पत्र विशेष रूप से "तीमुथियुस के नाम" (1:2) लिखा, जो उसका अच्छी तरह प्रशिक्षित दूत था। इसका प्रमाण पूरे पत्र में "तू" (मध्यम पुरुष एकवचन) संबोधन के बहुत-से रूप हैं: 1 तीमुथियुस 1:3 (2 बार), 18 (3 बार), 19; 3:14 (2 बार), 15; 4:6 (4 बार), 7 (3 बार), 11 (2 बार), 12 (2 बार), 13, 14 (3 बार), 15 (3 बार), 16 (7 बार); 5:1 (2 बार), 3, 7, 11, 18, 19, 20, 21 (2 बार), 22 (4 बार), 23 (3 बार); 6:2 (2 बार), 11 (3 बार), 12 (4 बार), 13, 14, 17, 20 (2 बार)। तीमुथियुस एक प्रचारक था (2 कुरिन्थियों 1:19), पौलुस का दूत (1 कुरिन्थियों 4:17; 16:10; 1 थिस्सलुनीकियों 3:2, 6; 1 और 2 तीमुथियुस) और सहकर्मी (रोमियों 16:21), जिसे पौलुस अपनी कई पत्रियों के पहले पद में अपने लिपिक के रूप में बताता है। उसने 2 कुरिन्थियों, फिलिप्पियों और कुलुस्सियों की पत्रियाँ, 1 और 2 थिस्सलुनीकियों और फिलेमोन की पत्री लिखी। तीमुथियुस निश्चय ही समझ सकता था कि इस संदर्भ में "जन्म के द्वारा उद्धार" यीशु की ओर संकेत करता है।

2) विवाह में विश्वासयोग्यता के लिए यूनानी मुहावरा दो रूपों में आता है: "एक स्त्री का पुरुष" (जैसे 1 तीमुथियुस 3:2) और "एक पुरुष की स्त्री" (जैसे 1 तीमुथियुस 5:9)। पर यदि विश्वासयोग्य साथी पुरुष भी हो सकता था, तो यूनानी भाषा का प्रयोग "एक स्त्री का पुरुष" वाला रूप माँगता था। टिमोथी फ्रिबर्ग (Timothy Friberg) नए नियम में 7,500 से 8,000 तक व्याकरणिक रूप से पुल्लिंग रूप गिनते हैं (लगभग हर वाक्य में एक!), जिनमें स्त्रियाँ या तो अवश्य सम्मिलित हैं या सम्मिलित हो सकती हैं। जॉन क्रिसोस्टम (Johannes Chrysostomus) ने यह समझा था। यह 1 तीमुथियुस 3 पर उनके 11वें प्रवचन (PG 62,545 आदि) से दिखता है, जहाँ वे 1 तीमुथियुस 3:12 पर लिखते हैं: "सेवकों (डीकनों) को एक स्त्री के पुरुष होना चाहिए। यह बात स्त्री सेवकों (डीकनों) के विषय में भी कही जानी चाहिए।" यद्यपि क्रिसोस्टम मानते थे कि स्त्रियाँ पुरुषों से हीन हैं (NPNF1 12:151.4), फिर भी उन्होंने स्वीकार किया कि यूनानी मुहावरा "एक स्त्री का पुरुष" स्त्रियों पर भी उतना ही लागू होता है जितना पुरुषों पर – जैसे हमारे यहाँ "एकविवाह" शब्द। **इसलिए "एक स्त्री का पुरुष" वाक्यांश स्त्रियों को अध्यक्ष (1 तीमुथियुस 3:2), प्राचीन (तीतुस 1:6) या सेवक (डीकन) (1 तीमुथियुस 3:12) के पद से बाहर नहीं करता।**

3) तीतुस 2:3 के अनुसार "स्त्री प्राचीनों" को ऐसा आचरण करना चाहिए जैसा पवित्रस्थान की सेवा के योग्य है, और ... "अच्छी बातें सिखाने वाली" होना चाहिए। पौलुस के शब्द ठीक "स्त्री प्राचीनों" पर बैठते हैं। इसलिए यह दावा नहीं करना चाहिए कि बाइबल में स्त्री प्राचीनों का उल्लेख नहीं है। "स्त्री प्राचीनों" के लिए शब्द, presbytidas, वही शब्द है जो बाद में "स्त्री प्राचीनों" की नियुक्ति को मना करने के लिए प्रयोग हुआ।[3] **पौलुस ने स्त्री प्राचीनों का वर्णन करने के लिए "अच्छी बातें सिखाने वाली" (kalodidaskalous) शब्द गढ़ा।** तीतुस 2:4-5 में

इसके उदाहरण आते हैं कि स्त्री प्राचीनों को क्या सिखाना चाहिए। निस्संदेह यह सूची पूरी नहीं है। पर इन पदों में कुछ भी यह नहीं कहता या संकेत नहीं देता कि स्त्री प्राचीन केवल जवान स्त्रियों को ही शिक्षा दे सकती हैं।

4) 1 पतरस 3:7 में कोई मुख्य क्रिया नहीं है। पर "वैसे ही" यह मानकर चलता है कि पतरस का आशय "अधीन रहो" था। इस प्रकार अधीन रहने की पहले की तीन आज्ञाओं के साथ एक समानांतर बनता है:

"प्रभु के लिए मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक अधिकार के अधीन रहो" (2:13)

"हे सेवको, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के अधीन रहो" (2:18)

"हे पत्नियो, तुम भी वैसे ही [homoiôs] अपने पति के अधीन रहो" (3:1)

इसलिए 1 पतरस 3:7 आज्ञा देता है: "हे पतियो, तुम भी वैसे ही [homoiôs] अपनी पत्नियों के अधीन रहो, उनके साथ समझदारी से रहते हुए, और उन्हें निर्बल स्त्री [BDAG 208, gynaikeios, 'स्त्री-संबंधी', जो 'संगी वारिस' के साथ जुड़कर संकेत देता है कि वह बहुमूल्य है] पात्र मानते हुए, और जीवन के अनुग्रहपूर्ण दान की संगी वारिस जानकर उन्हें आदर से भर दो, ताकि तुम्हारी प्रार्थनाएँ रुक न जाएँ।"

बहुत वर्षों तक मैंने अपनी खोजें प्रकाशित नहीं कीं, क्योंकि मुझे डर था कि इनसे कलीसिया में फूट पड़ सकती है। जब मेरी पत्नी और मैं जापान में इवैन्जेलिकल फ़्री चर्च (Evangelical Free Church) के मिशनरी के रूप में कार्य कर रहे थे, तो मैंने प्रभु से विनती की कि वह मुझे स्पष्ट कर दे कि क्या वह चाहता है कि मैं अपनी खोजें प्रकाशित करूँ। उस प्रार्थना के चौबीस घंटों के भीतर तीन बातें हुईं: अमेरिका में इवैन्जेलिकल फ़्री चर्च के अध्यक्ष, ए. टी. ओल्सन (A. T. Olson), ने मुझसे अपने परिणाम प्रकाशित करने को कहा। हमारे पास्टर-संघ के अध्यक्ष ने मुझसे कलीसिया की अगुवाई में स्त्रियों पर एक लेख लिखने को कहा। और मेरे हाथ डगलस जे. मू (Douglas J. Moo) का एक लेख लगा।[4] उसमें पृ. 70 पर कहा गया है कि "स्त्रियों का धोखा खाने के प्रति झुकाव उन्हें सार्वजनिक शिक्षा में भाग लेने से रोकता है ... कुछ ऐसे काम हैं जिनके लिए स्त्रियाँ स्वभाव से उपयुक्त नहीं हैं।" प्रार्थना के इन स्पष्ट उत्तरों ने मुझे एक लेख में मू को उत्तर देने की स्वतंत्रता दी।[5] अनगिनत लोगों ने मुझे गवाही दी है कि मेरे प्रकाशनों ने स्त्रियों को फलदायी सेवा के लिए स्वतंत्र किया है। इसके साथ संसार भर के और बहुत-सी मसीही परंपराओं के विद्वानों की सहमति भी है। इन सबने मुझे पूरी स्पष्टता से पुष्टि दी है: परमेश्वर ने सचमुच मुझे प्रकाशित करने की ओर अगुवाई दी।

पचास वर्षों के शोध के बाद भी मुझे पवित्रशास्त्र के मूल पाठ में ऐसा कोई स्थान नहीं मिला जो स्त्रियों की सेवा को सीमित करता हो। मेरे शोध ने मेरे इस भरोसे को दृढ़ किया है कि बाइबल जो कुछ सिखाती है, उस सब में वह त्रुटिहीन है। बाइबल, न कि हमारी संस्कृति, हमारा अधिकार है।

2.2 क्या पुरुषों और स्त्रियों की समानता महत्वपूर्ण है?

बहुत-से लोगों ने दास-प्रथा के विरुद्ध बाइबल पर आधारित आपत्तियाँ नहीं उठाईं, क्योंकि उन्हें डर था कि इससे कलीसिया में फूट पड़ सकती है। पर कलीसिया अब मानती है कि दास-प्रथा का विरोध न करना एक भयानक भूल थी। हम जातियों के बीच मेल-मिलाप के लिए प्रयास करते हैं और नस्लीय अन्याय की निंदा करते हैं। परमेश्वर स्त्रियों के लिए भी न्याय माँगता है। **परमेश्वर उस पक्षपात का विरोध करता है जो लिंगों के हर पदानुक्रम में छिपा है। और वह स्त्रियों के उस दमन का विरोध करता है जो इस पदानुक्रम ने इतिहास के दौरान उत्पन्न किया है। हाँ, इसलिए यह कोई महत्वहीन विषय नहीं है। यह सुसमाचार प्रचार, सुसमाचार की घोषणा**

और मसीह के राज्य की प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त यह इस बात पर भी प्रभाव डालता है कि हम प्रेम और आदर के साथ दूसरों से कैसा व्यवहार करते हैं, विशेषकर विवाह में।

यह विषय इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि बाइबल परमेश्वर का वचन है, जिसका अधिकार सब मनुष्यों पर है। सत्य सावधान विश्लेषण के कठिन परिश्रम के योग्य है। बाइबल के अशुद्ध अनुवादों और कुछ खंडों की भ्रामक व्याख्याओं ने स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार में योगदान दिया है। अन्य बातों के साथ इसका परिणाम यह हुआ कि लाखों लोगों ने कलीसिया से मुँह मोड़ लिया। और लाखों लोग बाइबल से घृणा करते हैं, क्योंकि वे ग़लती से सोचते हैं कि बाइबल स्त्रियों को दबाती है। बाइबल में अगुवाई के पदों पर रही स्त्रियों के बहुत-से उदाहरण सिद्ध करते हैं कि परमेश्वर स्त्रियों को सेवा के लिए वरदान देता है और उन्हें सेवा में ले जाता है। जो लोग स्त्रियों की सेवा को सीमित करते हैं, वे कलीसिया को दरिद्र बनाते हैं। वे सुसमाचार की घोषणा को सीमित करते हैं, पवित्र आत्मा के द्वारा स्त्रियों को दिए गए वरदान और बुलाहट का विरोध करते हैं, और पवित्रशास्त्र के उन बहुत-से सिद्धांतों के विरुद्ध काम करते हैं जो पुरुष और स्त्री के समान अधिकार को व्यक्त करते हैं।

3 बाइबल स्त्री और पुरुष की समानता[6] की शिक्षा देती है

क्या लिंगों के प्रश्न पर बाइबल असंगत है? बहुत-से अत्यंत प्रतिष्ठित सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) विद्वान मानते हैं कि बाइबल लिंगों की समानता की भी पुष्टि करती है और लिंग-आधारित भूमिकाओं की भी, और कि दोनों के बीच एक तनाव है। क्या हम बाइबल के पाठ के साथ ज़बरदस्ती किए बिना एक संगत बाइबलीय दृष्टिकोण तक पहुँच सकते हैं? क्या अच्छी व्याख्या (एक्सेजेसिस) को क्रमबद्ध धर्मविज्ञान की वेदी पर बलि करना पड़ेगा? निश्चय ही अच्छी व्याख्या और अच्छा क्रमबद्ध धर्मविज्ञान साथ-साथ चलते हैं। मैंने दशकों तक प्रार्थना के साथ लिंगों के विषय से संबंधित पाठों के प्रतीत होने वाले विरोधाभासों से संघर्ष किया है, और ईमानदारी से कह सकता हूँ कि बाइबल के पाठों ने ही मेरी समझ को बदला है। सृष्टि से लेकर नई सृष्टि तक, कलीसिया और विवाह में लिंगों के विषय में बाइबल का संदेश लगातार स्त्री और पुरुष की समानता की पुष्टि करता है।

3.1 पुराने नियम में स्त्रियाँ

3.1.1 सृष्टि में और पतन के बाद स्त्री

उत्पत्ति की पुस्तक दिखाती है: परमेश्वर ने मनुष्यों को समान लिंगों के रूप में सृजा, पुरुष की अगुवाई के अधीन नहीं।[7] वह सिखाती है कि पुरुष और स्त्री दोनों समान रूप से परमेश्वर के स्वरूप में सृजे गए हैं और मिलकर पृथ्वी पर प्रभुता रखते हैं (उत्पत्ति 1:26-27)। उनकी समानता परमेश्वर के सामने उनकी आत्मिक स्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि पृथ्वी पर उनकी प्रभुता तक भी फैली है। परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री को आशीष दी और पद 28 में दोनों को यह काम सौंपा: "फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और ... पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।"

सृष्टि-वृत्तांत की संरचना स्त्री की सृष्टि में अपने चरम पर पहुँचती है, जो पुरुष की उस आवश्यकता को पूरा करती है कि उसे उसके अनुरूप एक साथी मिले (2:18, 20)। पाठ बताता है कि स्त्री पुरुष की ʿezer kĕnegĕdô के रूप में सृजी गई, जिसका शाब्दिक अनुवाद है: "उसके अनुरूप एक शक्ति"। दुर्भाग्य से ʿezer शब्द का अनुवाद यहाँ अक्सर "सहायक" किया जाता है, जो अंग्रेज़ी या जर्मन में किसी अधीनस्थ या सेवक का भाव देता है। पर बाइबल में ʿezer कभी "सेवक" के अर्थ में "सहायक" के लिए नहीं आता, बल्कि लगभग हमेशा परमेश्वर का वर्णन

अपने लोगों के उद्धारकर्ता, शक्ति या सामर्थ्य के रूप में करता है।[8] बाइबलीय इब्रानी का प्रामाणिक शब्दकोश ʿezer के बाइबलीय अर्थ "सहायता, समर्थन, सामर्थ्य और शक्ति" बताता है, पर "सहायक" नहीं।[9] तीन बार ʿezer एक सैन्य रक्षक का वर्णन करता है।[10] इनमें से किसी भी स्थान का संदर्भ यह निष्कर्ष निकालने की अनुमति नहीं देता कि परमेश्वर या स्त्री ʿezer के रूप में पुरुष के अधीन है।[11]

दूसरा शब्द, kĕnegĕdô, kĕ (के समान) + negĕd (सामने) + ô (उसके) से बना है और इसका अर्थ है "मानो उसके सामने"। Nāgîd, जो negĕd से संबंधित एक संज्ञा है, उस व्यक्ति को दर्शाती है जो आगे खड़ा है, और इसका अर्थ है "वह जिसे (यहोवा के द्वारा) अगुवा घोषित किया गया"।[12] इसलिए ʿezer की तरह kĕnegĕdô भी किसी अधीनस्थ के बजाय किसी श्रेष्ठ या बराबर के व्यक्ति को दर्शाता है। उत्पत्ति 2 में ʿezer kĕnegĕdô अभिव्यक्ति में ऐसा कुछ भी नहीं जो यह संकेत दे कि परमेश्वर ने स्त्री को पुरुष की अधीनस्थ सहायिका के रूप में सृजा। इसके विपरीत: यह अभिव्यक्ति उसकी शक्ति को उजागर करती है। वह पुरुष की समान अधिकार वाली साथी है और उसे अकेलेपन से बचाती है। वह उसकी प्रतिरूप है: उसकी संगिनी और मित्र, जो पृथ्वी पर प्रभुता करने में उसकी पूर्ति करती है। वह उसे पूर्ण करती है, ताकि वे मिलकर फलवंत हों और पृथ्वी की रखवाली कर सकें।

उत्पत्ति का सृष्टि-वृत्तांत और कहीं भी पुरुष को स्त्री से ऊँचा दर्जा या अधिक अधिकार नहीं देता।[13] इसके विपरीत: वह लगातार उनकी समानता को रेखांकित करता है। परमेश्वर पुरुष की पसली से स्त्री को बनाता है, और पुरुष पहचानता है: "अब यह मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है" (2:23), क्योंकि उनका तत्व एक ही है (2:21-23)। "पिता और माता" का उल्लेख बिना किसी दर्जे के अंतर के साथ-साथ होता है (2:24)। विवाह में वे "मिले रहते" हैं और "एक तन" हैं (2:24)। दोनों नंगे हैं और लज्जित नहीं होते; वे नैतिक निर्दोषता में सहभागी हैं (2:25)। दोनों मिलकर परीक्षा में पड़ते हैं और परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं (3:6)। दोनों पहचानते हैं कि वे नंगे हैं, और अपने लिए आवरण सी लेते हैं (3:7)। दोनों परमेश्वर से छिपते हैं (3:8)। यह दिखाता है: दोनों लज्जित हैं कि उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी। दोनों दोष अपने ऊपर से टालते हैं (3:12-13)। परमेश्वर दोनों से सीधे बात करता है और उन्हें उनके पाप के ठोस परिणाम बताता है (3:9-13, 16-19)। दोनों अपने-अपने कामों के लिए उत्तरदायी हैं। इसलिए उत्पत्ति 2-3 लिंगों की समानता को प्रस्तुत करता है, न कि किसी ऐसी "सृष्टि की व्यवस्था"[14] को जो पुरुषों को स्त्रियों पर अधिकार देती हो।

स्त्री पर पुरुष का प्रभुत्व परमेश्वर की मूल योजना में नहीं है। पुरुष के शासन का पहला उल्लेख उत्पत्ति 3:16 में मिलता है, जहाँ उसे पतन का सीधा परिणाम बताया गया है: "वह तुझ पर प्रभुता करेगा।" पुरुष-पदानुक्रम के प्रमुख समर्थक भी मानते हैं कि यह "इस बात का निर्देश नहीं है कि क्या होना चाहिए"।[15] पतन के हर दूसरे परिणाम की तरह यह भी बुराई की ओर एक परिवर्तन है। इसे अपने इस सिद्धांत से मेल बैठाने के लिए कि पुरुष सृष्टि से ही सिर है, पदानुक्रम के समर्थक दावा करते हैं: उत्पत्ति 3:16 में बात प्रेमहीन शासन के आरंभ की है, न कि सामान्य रूप से स्त्रियों पर पुरुष के शासन की।[16] पर पाठ यह नहीं कहता कि केवल प्रेमहीन पुरुष-शासन पतन का परिणाम है; वह कहता है कि पुरुष-शासन स्वयं पतन का परिणाम है। उत्पत्ति 3:16 में "प्रभुता करना" के लिए सबसे अधिक प्रयोग होने वाला शब्द है। वह अपने आप में बुरे शासन का विचार नहीं जगाता। यह शब्द तो परमेश्वर के शासन के लिए भी प्रयोग होता है, जो निश्चय ही बुरा शासन नहीं है! बाइबलीय इब्रानी के दोनों बड़े शब्दकोश पुराने नियम में इस शब्द के हर प्रयोग का विश्लेषण करते हैं और इसके लिए कोई नकारात्मक अर्थ नहीं बताते।[17] यह शब्द बुरे शासन का संकेत नहीं देता, बल्कि इसका अर्थ केवल "शासन" है। क्योंकि स्त्री पर पुरुष का शासन स्वयं पतन का परिणाम है, इसलिए पतन से पहले पुरुष स्त्री पर शासन नहीं कर सकता था। सबसे अच्छी परिस्थितियों में भी स्त्री पर पुरुष के शासन का एक व्यावहारिक परिणाम होता है: स्त्री से वह अधिकार छीन लिया जाता है जो

परमेश्वर ने सृष्टि के समय उसे पुरुष के बराबर दिया था। इसके अतिरिक्त बहुत-से पुरुषों ने अपने पतित स्वभाव के कारण अपने अधिकार के पद का प्रयोग स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार के लिए किया है। मसीह, स्त्री का वह वंश जिसके विषय में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि वह साँप के सिर को कुचलेगा (उत्पत्ति 3:15), पतन पर जय पा चुका है।

इसलिए हमें पतन के दुखद परिणामों को बढ़ावा नहीं देना चाहिए, बल्कि उनका विरोध करना चाहिए। इनमें स्त्री पर पुरुष का शासन भी है।

3.1.2 पुराने नियम के बाकी भाग में स्त्रियाँ

पुराना नियम बहुत-सी ऐसी स्त्रियों की प्रशंसा करता है जिन्होंने पुरुषों की अगुवाई की, जिनमें पत्नियाँ और माताएँ भी हैं। वह ऐसी स्त्रियों को दिखाता है जिन्होंने परमेश्वर की आशीष के साथ अगुवाई की। कहीं भी यह संकेत नहीं कि उनका लिंग उन्हें इसके लिए अयोग्य बनाता था। भविष्यद्वक्तिन मरियम को परमेश्वर इस्राएल की अगुवाई के लिए भेजता है (मीका 6:4; तुलना कीजिए निर्गमन 15:20-21)। दबोरा उन न्यायियों में से है जिन्हें "यहोवा ने ठहराया" और जिन्होंने "इस्राएल को उनके शत्रुओं के हाथ से छुड़ाया" (न्यायियों 2:16, 18; 4:10, 14, 24; 5:1-31); वह एक भविष्यद्वक्तिन और पूरे इस्राएल की सर्वोच्च अगुवा थी (4:4-5)। उसे, जो पत्नी और माता थी (5:7), इस्राएल के सेनापति बाराक को यह आज्ञा देने का अधिकार था: "जा!" (4:6, 14), और वह गया। उन्होंने साझा अधिकार के साथ अच्छी तरह मिलकर काम किया: वह सेनापति के रूप में, वह सर्वोच्च सेनानायिका के रूप में। रानी एस्तेर का इतना प्रभाव था कि उसने हामान के घराने और यहूदियों के 75,000 शत्रुओं का विनाश करवाया (एस्तेर 7:1-10; 9:1-32)। मोर्दकै के साथ मिलकर उसने "पूरे अधिकार के साथ लिखा ... एस्तेर की आज्ञा से इन नियमों की पुष्टि हुई" (9:29-32)। बाइबल शेबा की रानी (1 राजाओं 10:1-13; 2 इतिहास 9:1-12) और कसदियों की रानी (दानिय्येल 5:10-12) की प्रशंसा करती है। "रानी" के लिए इब्रानी शब्द केवल स्त्रीलिंग प्रत्यय के साथ "राजा" है। बाइबल में "राजा" के मूल से बनी उपाधि वाले केवल तीन व्यक्तियों की केवल प्रशंसा की गई है और कभी आलोचना नहीं हुई: ये तीन स्त्रियाँ। यहूदा के राजाओं के अभिलेखों में हमेशा राजमाताओं, अर्थात् राजाओं की माताओं का उल्लेख होता है या उनका नाम लिया जाता है (तुलना कीजिए यिर्मयाह 13:18; 29:2; 2 राजाओं 24:15)। इनमें बतशेबा थी, जो सिंहासन पर बैठी (1 राजाओं 2:17-19), माका (1 राजाओं 15:2, 10, 13) और नहुश्ता (2 राजाओं 24:8)।

जब व्यवस्था की वह पुस्तक मिली जिसे खोया हुआ समझा जाता था, तो याजकों ने उसके विषय में भविष्यद्वक्तिन हुल्दा से पूछा और स्वयं को उसकी आत्मिक अगुवाई के अधीन किया। इस्राएल के अगुवों ने, जिनमें राजा, प्राचीन, भविष्यद्वक्ता और लोग भी थे, उसके वचन को ईश्वरीय प्रकाशन के रूप में स्वीकार किया (2 राजाओं 22:14-23:3; 2 इतिहास 34:22-32)। इस्राएल के पुरुष अगुवों ने परमेश्वर के उस वचन का पालन किया जो एक स्त्री ने कहा था। इससे संभवतः इस्राएल के इतिहास का सबसे बड़ा जागरण हुआ (2 राजाओं 22:14-23:25; 2 इतिहास 34:29-35:19)।

पुराने नियम का एक भी पाठ यह नहीं कहता कि परमेश्वर ने स्त्रियों को पुरुषों पर ऐसा राजनीतिक या धार्मिक अधिकार केवल विशेष परिस्थितियों के कारण दिया। और कहीं भी इन मामलों को किसी बाइबलीय सिद्धांत के अपवाद के रूप में नहीं बताया गया। यह सच है कि इस्राएल की दो शासिकाएँ दुष्ट थीं: अतल्याह (2 राजाओं 11:1-3; 2 इतिहास 22:10-12) और ईज़ेबेल (1 राजाओं 18:4)। पर इस्राएल के अधिकतर राजा भी ऐसे ही थे। पवित्रशास्त्र न तो उनकी और न ही इस्राएल की किसी अन्य अगुवा स्त्री की इस आधार पर आलोचना करता है कि

पुरुषों पर अधिकार किसी स्त्री को शोभा नहीं देता। इसके बजाय पुराना नियम धार्मिक और राजनीतिक अगुवाई के पदों पर स्त्रियों को सामान्य बात के रूप में प्रस्तुत करता है।

पुराने नियम में केवल एक महत्वपूर्ण सामाजिक या धार्मिक अगुवाई का पद ऐसा था जो स्त्रियों के पास कभी नहीं रहा: याजक का पद। इसका कारण स्पष्ट है: कुछ मूर्तिपूजक पंथों में पुजारिनें वेश्यावृत्ति या पंथ से जुड़े यौन अनुष्ठानों से संबंधित थीं। व्यवस्थाविवरण 23:17 इसे मना करता है। परमेश्वर ने अपने लोगों को बार-बार मना किया कि वे ऐसा आभास भी न दें कि वे आसपास की जातियों की अनैतिक रीतियों का पालन करते हैं।[18] पुजारिनें ठीक यही आभास देतीं। पर पुराने नियम का आदर्श यह था कि पूरी इस्राएल जाति "याजकों का राज्य और पवित्र जाति" हो (निर्गमन 19:6)। यशायाह 61:6 एक ऐसे समय की भविष्यद्वाणी करता है जब परमेश्वर के सब लोग याजक होंगे: "तुम यहोवा के याजक कहलाओगे, वे तुम को हमारे परमेश्वर के सेवक कहेंगे।" परमेश्वर ने नए नियम की कलीसिया में अपने सब लोगों के याजकपद को साकार किया है (1 पतरस 2:9)।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने घोषणा की कि परमेश्वर ने स्त्रियों के लिए भविष्यद्वाणी की एक बड़ी भूमिका ठहराई थी। मूसा ने लिखा: "भला होता कि यहोवा की सारी प्रजा के लोग नबी होते, और यहोवा अपना आत्मा उन सभों में समवा देता!" (गिनती 11:29)। योएल ने परमेश्वर का अभिप्राय घोषित किया: "मैं सब प्राणियों पर अपना आत्मा उंडेलूँगा; तुम्हारे बेटे-बेटियाँ भविष्यद्वाणी करेंगी ... तुम्हारे दास और दासियों पर भी मैं उन दिनों में अपना आत्मा उंडेलूँगा" (योएल 2:28-29), एक प्रतिज्ञा जो पिन्तेकुस्त के दिन पूरी हुई (प्रेरितों के काम 2:14-21)।

परमेश्वर ने स्त्रियों को सबसे बड़े भविष्यद्वाणी के कार्य के लिए भी प्रयोग किया: उनके द्वारा उसने ईश्वर-प्रेरित पवित्रशास्त्र के महत्वपूर्ण भाग कहे। इनमें मरियम (निर्गमन 15:21) और दबोरा (न्यायियों 5:2-31) के गीत और हन्ना की प्रार्थना (1 शमूएल 2:1-10) हैं। नए नियम में भी परमेश्वर ने इसी तरह स्त्रियों के द्वारा बात की: इलीशिबा के गीत में (लूका 1:25, 42-45) और मरियम के स्तुति-गान (मैग्निफ़िकैट) में, जो पवित्रशास्त्र की पहली मसीही व्याख्या है (लूका 1:46-55)। इसलिए परमेश्वर ने स्त्रियों को पुरुषों की अगुवाई करने से कदापि बाहर नहीं रखा। इसके विपरीत: उसने स्त्रियों को सांसारिक और आत्मिक दोनों प्रकार की अगुवाई के कामों के लिए बुलाया।

3.2 यीशु और स्त्रियाँ

यीशु ने अपने सब वचनों और कामों के द्वारा हमें एक उदाहरण दिया: उसने स्त्रियों से पुरुषों के समान व्यवहार किया, कभी अधीनस्थ के रूप में या अपनी भूमिका में सीमित के रूप में नहीं (मत्ती 12:49-50; 15:38; 25:31-46; मरकुस 3:34-35; लूका 8:21; 11:27-28)। उसका स्त्रियों से बराबर वालों जैसा व्यवहार करना उसके समय की कानूनी, सामाजिक और धार्मिक रीतियों के विरुद्ध था। उन कानूनी मामलों में, जिनमें स्त्रियों के अधिकार सीमित थे, जैसे व्यभिचार और तलाक, उसने पुरुषों और स्त्रियों से एक समान व्यवहार किया। एक ऐसे समाज में, जो स्त्रियों को पुरुषों से कम बुद्धिमान और कम नैतिक मानता था, यीशु ने स्त्रियों की बुद्धि और आत्मिक क्षमताओं का आदर किया। यह उन महान आत्मिक सत्यों से दिखता है जो उसने पहले स्त्रियों को सिखाए, जैसे सामरी स्त्री को (यूहन्ना 4:10-26) और मार्था को (यूहन्ना 11:25-26)।

एक ऐसी संस्कृति में, जिसमें स्त्रियों की धार्मिक शिक्षा को बुरा समझा जाता था, यीशु ने स्त्रियों को अपनी चेली बनने के लिए प्रोत्साहित किया। उदाहरण के लिए, जब मरियम "प्रभु के पाँवों के पास बैठकर सुन रही थी" – जो एक चेली की मुद्रा और स्थिति थी – तो यीशु ने उसका समर्थन किया: "मरियम ने उस उत्तम भाग को चुन लिया है जो उससे छीना न जाएगा" (लूका 10:38-42)।[19] इस बात पर सामान्य सहमति है कि यीशु के समय में चेलों को किसी रब्बी की शिक्षाओं को आगे पहुँचाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता था, और वे सामान्यतः स्वयं शिक्षक बनते

थे। पर रब्बियों के शिष्य हमेशा पुरुष होते थे। यीशु ने पुरुष और स्त्री दोनों चेलों को शिक्षा दी। यह उसके इस अभिप्राय की ओर संकेत करता है कि स्त्रियाँ और पुरुष दोनों विश्वास के शिक्षक बनें।

फिर भी यीशु ने बारह प्रेरितों के मूल समूह के लिए केवल पुरुषों को चुना। आरंभिक कलीसिया में उनकी अगुवाई की भूमिका बहुत सम्मानित थी। क्या इससे उसने स्त्रियों को कलीसिया की अगुवाई से बाहर कर दिया? नहीं। प्रेरितों के रूप में केवल पुरुषों का चुना जाना तर्क के अनुसार स्त्रियों को कलीसिया की अगुवाई से उतना ही बाहर करता है, जितना प्रेरितों के रूप में स्वतंत्र यहूदियों का चुना जाना अन्यजातियों या दासों को कलीसिया की अगुवाई से बाहर करता है। वैसे भी आरंभिक कलीसिया के दो सबसे प्रभावशाली अगुवे यीशु का भाई याकूब (प्रेरितों के काम 15:13; गलातियों 1:19)[20] और पौलुस थे। दोनों बारहों में से नहीं थे, फिर भी प्रेरित थे – ठीक वैसे ही जैसे एक स्त्री: यूनिया।[21] जब बारहों के समूह से बाहर के अन्य प्रेरित भी कलीसिया की अगुवाई में मुख्य पदों पर थे, तो बारह ही कलीसिया की अगुवाई के लिए हमारा एकमात्र मापदंड क्यों हों?

तो फिर यीशु ने मूल बारह प्रेरितों के लिए केवल पुरुषों को और किसी स्त्री को क्यों नहीं चुना? नया नियम उसके कारण नहीं बताता। पर संभवतः यीशु ने दो कारणों से पुरुषों को चुना: ठोकर का कारण न बनने के लिए और एक प्रतीकात्मक समानता रचने के लिए। यदि यीशु स्त्रियों को रात की सभाओं में साथ ले जाता, विशेषकर जंगल में या गतसमनी की बारी जैसे स्थानों पर, तो इससे नैतिक संदेह उत्पन्न होता – न केवल यीशु के विरुद्ध, बल्कि उन बारहों के विरुद्ध भी, जिनकी खराई पर कलीसिया निर्भर होने वाली थी। इसके अतिरिक्त यीशु के द्वारा बारह स्वतंत्र यहूदी पुरुषों की नियुक्ति इस्राएल के बारह पुत्रों या गोत्रों के अनुरूप थी और कलीसिया को "नए या नवीनीकृत इस्राएल" के रूप में दिखाने वाले प्रतीक को दृढ़ करती थी। यह बात कि यीशु ने चेलियाँ भी चुनीं (ऊपर देखिए), यह भी दिखाती है: बारह पुरुष प्रेरितों को चुनकर वह स्त्रियों को कलीसिया की अगुवाई से बाहर नहीं करना चाहता था।

यीशु ने स्त्रियों को पुरुषों के सामने सुसमाचार सुनाने से भी नहीं रोका। पहली मसीही मिशनरी एक सामरी स्त्री थी: "उस नगर के बहुत-से सामरियों ने उस स्त्री के कहने से ... उस पर विश्वास किया" (यूहन्ना 4:39; तुलना कीजिए 4:28-42)। जी उठे मसीह ने सबसे पहले जिससे भेंट की, वह मरियम मगदलीनी थी। उसे उसने अपने पुनरुत्थान और परमेश्वर पिता के पास अपने निकट आने वाले स्वर्गारोहण का सुसमाचार सुनाने का काम सौंपा (यूहन्ना 20:14-18)। क्योंकि "प्रेरित" का अर्थ केवल "भेजा हुआ" है, इसलिए यह कहना उचित है कि मसीह ने उसे प्रेरितों की प्रेरित नियुक्त किया। मसीह ने अगुवाई को नए सिरे से परिभाषित किया: नम्र, सेवा करने वाली अगुवाई के रूप में (जैसे यूहन्ना 13:3-17)। मसीह की सेवा में ऐसी अगुवाई स्त्रियों के लिए कम से कम उतनी ही उपयुक्त है जितनी पुरुषों के लिए।

3.3 पौलुस और स्त्रियाँ: समानता के पक्षधर

पौलुस तीन तरह से स्त्री और पुरुष की समानता की पुष्टि करता है: वह स्त्रियों को सहकर्मियों के रूप में नाम लेकर बताता है, जो पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सेवा करती हैं। वह बहुत-से धर्मवैज्ञानिक सत्यों का प्रतिपादन करता है, जिनसे पुरुषों और स्त्रियों की समानता निकलती है। और वह उनकी समानता पर स्पष्ट रूप से ज़ोर देता है।

3.3.1 सेवा में स्त्रियों के प्रति पौलुस की पुष्टियाँ

रोमियों 16:1-16 में पौलुस बहुत-से लोगों को नाम लेकर नमस्कार कहता है। उनमें से दस को वह मसीही सेवा में सहकर्मी कहता है। इन दस में से सात स्त्रियाँ हैं: फीबे, "किंख्रिया की कलीसिया की सेविका (डीकन)" (16:1) और "बहुतों की अगुवा[22], मुझ समेत" (16:2); यूनिया, "प्रेरितों में प्रमुख" (16:7)[23]; प्रिस्का, "मसीह यीशु में मेरी सहकर्मी" (16:3; तुलना कीजिए फिलिप्पियों 4:3); और मरियम, त्रूफेना, त्रूफोसा और पिरसिस, जिन्होंने "प्रभु में लगन से" परिश्रम किया (16:6, 12)। 1 कुरिन्थियों 16:16 में पौलुस विश्वासियों से कहता है कि वे "हर एक सहकर्मी के अधीन रहें"। 1 थिस्सलुनीकियों 5:12 में "जो तुम्हारे बीच परिश्रम करते हैं" उन्हें "वे जो प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं और तुम्हें चिताते हैं" कहा गया है। इस बात पर जितना ज़ोर दिया जाए, कम है कि पौलुस इन स्त्रियों को केवल विश्वासियों के रूप में नहीं गिनाता, बल्कि सेवा में अगुवों के रूप में। इस खंड में पौलुस बहुत-से विश्वासियों को नमस्कार कहता है, पर केवल दस लोगों को सेवा में अगुवे कहता है, और उनमें से सात स्त्रियाँ हैं। तीन पुरुष हैं अक्विला, अन्द्रुनीकुस और उरबानुस। पहले दो का नाम उनकी पत्नियों के साथ लिया गया है, जो उनके साझा अधिकार को रेखांकित करता है। **पौलुस किसी सार्वजनिक समुदाय के अगुवों में स्त्रियों का इतना ऊँचा अनुपात बताता है – प्राचीन यूनानी साहित्य के पूरे इतिहास में यह अद्वितीय है। यह संकेत देता है कि आरंभिक कलीसिया में स्त्रियाँ इतनी मात्रा में अगुवाई करती थीं, जो उस समय की संस्कृति के लिए असाधारण थी।**

3.3.2 पौलुस के धर्मविज्ञान से स्त्री और पुरुष की समानता निकलती है

पौलुस पुष्टि करता है कि पुरुष और स्त्री दोनों समान रूप से "परमेश्वर के स्वरूप में रचे गए" हैं और "मसीह में" हैं। उन्हें पृथ्वी पर अधिकार सौंपा गया, और दोनों ने सृष्टि का दायित्व और परमेश्वर की आशीष पाई है। उसके धर्मविज्ञान के बहुत-से मूल सिद्धांतों में उनकी समानता अनिवार्य रूप से शामिल है: सेवा करने वाली अगुवाई, कलीसिया और विवाह में "एक दूसरे के अधीन रहना", मसीह की देह की एकता, सब विश्वासियों का याजकपद, सब के लिए आत्मा के वरदान, मसीह में स्वतंत्रता, पहले ही आरंभ हो चुका अंत का समय, नई सृष्टि और यह कथन कि मसीह में "न पुरुष और न स्त्री में कोई भेद" है।[24]

3.3.3 स्त्री और पुरुष की समानता की पौलुस द्वारा स्पष्ट पुष्टि

दो स्थानों पर (गलातियों 3:28 और 1 कुरिन्थियों 11:11) पौलुस स्पष्ट रूप से इस पक्ष में बोलता है कि कलीसिया के जीवन में स्त्रियाँ और पुरुष बराबर के अधिकारी हैं।

गलातियों 2:11–3:28 में वह ज़ोर देता है: यदि कलीसिया में किसी सामाजिक समूह के साथ असमान व्यवहार किया जाता है – स्त्रियों के समूह के साथ भी –, तो यह सुसमाचार के विरुद्ध है। वह यहूदी मसीहियों की कड़ी निंदा करता है, जिनमें स्पष्ट रूप से प्रेरित पतरस भी है। वे अन्यजाति मसीहियों के साथ बराबरी का व्यवहार नहीं करते थे और उनके साथ भोजन करने से भी इनकार करते थे। पौलुस का तर्क है: मसीहियों की छुड़ाए हुए लोगों के रूप में पहचान केवल मसीह में है। इसलिए कलीसिया में मूल, धन या लिंग के अनुसार पद या विशेषाधिकार बाँटना सुसमाचार के विरुद्ध है: "यहूदियों और यूनानियों में कोई भेद नहीं, दासों और स्वतंत्र लोगों में कोई भेद नहीं, पुरुषों और स्त्रियों में कोई भेद नहीं, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो"। ये सब सामाजिक श्रेणियाँ हैं, और "मसीह यीशु में" का अर्थ कलीसिया है। इसलिए गलातियों 3:28 सबसे स्पष्ट रूप से कलीसिया के सामाजिक संबंधों से संबंधित है। बाद में पतरस स्वयं इस बात का आदर्श बना कि विश्वासियों के साथ ऐसे असमान व्यवहार

पर पछताया जाए और सोच बदली जाए: 2 पतरस 3:15-16 में वह "हमारे प्रिय भाई पौलुस" की बात करता है और "उसकी सब पत्रियों" के ज्ञान को "पवित्रशास्त्र" के रूप में स्वीकार करता है।

कुछ लोग कहते हैं कि इस खंड में केवल इस बात की चर्चा है कि किसका उद्धार हो सकता है, और इसका कलीसिया के जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। पर वे गलत समझते हैं कि यह खंड उद्धार के विषय में क्या कहता है, और ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ और उसके शब्दों से निकलने वाले निष्कर्षों की उपेक्षा करते हैं।[25] **यह खंड उद्धार को कलीसिया के सामाजिक जीवन से अटूट रूप से जोड़ता है।** जैसे पौलुस के सब लेखों में, मसीह में छुटकारे को मसीह की देह, अर्थात् कलीसिया, के जीवन से अलग नहीं किया जा सकता। सांस्कृतिक संदर्भ भी महत्वपूर्ण है: गलातियों 3:28 उन धारणाओं को अस्वीकार करता है जो एक दैनिक यहूदी प्रार्थना सिखाती थी। उसमें प्रार्थना करने वाला परमेश्वर को धन्यवाद देता था कि वह अन्यजाति, दास या स्त्री के रूप में पैदा नहीं हुआ। क्योंकि इन समूहों को व्यवस्था का अध्ययन करने का विशेषाधिकार नहीं था। जब पौलुस इन भेदों को अस्वीकार करता है, तो इससे उल्टा निष्कर्ष निकलता है: ये सब समूह कलीसिया के व्यावहारिक जीवन में बराबर के दर्जे के हैं – क्योंकि वे सब मसीह में एक हैं।

गलातियों 3:28 की एक निकट समानांतर बात 1 कुरिन्थियों 11:11 है: "तौभी प्रभु में न तो स्त्री पुरुष से अलग[26] है, और न पुरुष स्त्री से अलग है।" पौलुस यह एक ऐसे संदर्भ में कहता है जिसमें वह पुष्टि करता है: स्त्रियाँ पुरुषों की तरह कलीसिया की सार्वजनिक सभाओं में सबसे महत्वपूर्ण कार्यों की अगुवाई कर सकती हैं – प्रार्थना (आराधना का ऊर्ध्वाधर आयाम) और भविष्यद्वाणी (आराधना का क्षैतिज आयाम)। शर्त केवल यह है कि ऐसा करते हुए वे न तो विवाह पर और न मसीही नैतिकता पर प्रश्न उठाएँ।[27] अतः यह कथन, कि पुरुष और स्त्री "प्रभु में" अलग नहीं हैं, कम से कम कलीसिया में अगुवाई के इन कार्यों पर लागू होता है। पद का पहला शब्द, "तौभी", यूनानी में संकेत देता है कि आगे आने वाला वाक्य पाठ की सबसे महत्वपूर्ण बात है। यह सच है कि पौलुस पुरुषों और स्त्रियों के लिए बालों की अलग-अलग शैली की माँग करता है (11:14-15), ताकि उनके बाल बनाने के ढंग को अनैतिकता का चिह्न न समझा जाए। पर सार्वजनिक आराधना के विषय में उसकी सबसे महत्वपूर्ण बात कुछ और है: वह मसीह में लिंग के आधार पर हर विभाजन को दृढ़ता से अस्वीकार करता है। इसलिए वह इसका स्वागत करता है कि पुरुष और स्त्रियाँ दोनों प्रार्थना और भविष्यद्वाणी के द्वारा आराधना की अगुवाई करें।

3.3.4 पति और पत्नी की समानता के विषय में पौलुस की पुष्टियाँ

1 कुरिन्थियों 7 में, जो विवाह पर उसका सबसे विस्तृत विवेचन है, पौलुस बारह अलग-अलग प्रश्नों में पुरुष और स्त्री के लिए बिलकुल एक जैसी शर्तें, संभावनाएँ, अधिकार और कर्तव्य बताता है। इनमें से हर बात में वह पुरुषों और स्त्रियों को बराबर के अधिकारी मानकर संबोधित करता है। इस समानता को रेखांकित करने के लिए पौलुस बार-बार संतुलित, सममित वाक्य-रचना का उपयोग करता है। आगे के बारह विषय यह स्पष्ट करते हैं: पौलुस ज़ोर देता है कि पति और पत्नी एक दूसरे के हैं (पद 2)। उनके परस्पर वैवाहिक अधिकार हैं (पद 3), एक दूसरे की देह पर परस्पर अधिकार है (पद 4) और परस्पर यौन कर्तव्य हैं (पद 5)। दोनों से कहा गया है कि वे अलग न हों और तलाक न दें (पद 10-13)। दोनों एक दूसरे को और अपने बच्चों को पवित्र ठहराते हैं (पद 14)। जब दूसरा उन्हें छोड़ दे, तो दोनों स्वतंत्र हैं (पद 15)। दोनों का दूसरे पर संभवतः उद्धार दिलाने वाला प्रभाव है (पद 16)। दोनों विवाह करने के लिए स्वतंत्र हैं (पद 28)। दोनों अविवाहित रहकर मसीह पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं (पद 32 और 34b) या विवाहित होकर इस पर कि दूसरे को प्रसन्न करें (पद 33-34a और 34c)। पौलुस यहाँ तक लिखता है: "पति को अपनी देह पर अधिकार नहीं, परन्तु पत्नी को है" (7:4)। रिचर्ड हेज़ (Richard Hays) ठीक ही बताते हैं

कि यह कितना क्रांतिकारी था: "पौलुस विवाह की एक ऐसी दृष्टि प्रस्तुत करता है जो अब तक के सब ढाँचों को तोड़ देती है: एक ऐसा संबंध, जिसमें साथी एक दूसरे के अधीन रहते हुए एक दूसरे से बंधे हैं।"[28]

इसी तरह इफिसियों 5:21-22 में: पत्नी का अधीन रहना स्पष्ट रूप से एक दूसरे के अधीन रहने का एक भाग है। दोनों स्वेच्छा से और प्रेम में एक दूसरे के अधीन रहते हैं।[29] पौलुस पत्नियों और पतियों दोनों से कहता है कि वे एक दूसरे को प्राथमिकता दें और एक दूसरे की देखभाल करें। मसीह सब विश्वासियों के लिए आदर्श है, पत्नियों के लिए भी और पतियों के लिए भी (5:2)। जब पौलुस मसीह को "सिर" कहता है, तो उसका क्या अर्थ है, यह वह पद 23 में दिखाता है: वह ज़ोर देकर "सिर" को "उद्धारकर्ता" के बराबर रखता है – "मसीह कलीसिया का सिर है, वह देह का उद्धारकर्ता है।"

मसीह "उद्धारकर्ता" के रूप में क्या करता है? पौलुस समझाता है: "मसीह ने अपने आप को दे दिया" कलीसिया के लिए (5:25) और वह उसका "पालन-पोषण करता है" (5:29)। इससे पता चलता है: पौलुस "सिर" शब्द का प्रयोग प्रचलित यूनानी अर्थ "स्रोत" में करता है। यहाँ उसका लक्ष्य मसीह को कलीसिया के लिए प्रेम और प्रावधान के स्रोत के रूप में दिखाना है।[30] पौलुस पतियों से कहता है कि वे अपनी पत्नियों के "सिर" के रूप में मसीह के "सिर" होने के उदाहरण का अनुसरण करें: वे अपनी पत्नियों से प्रेम करें, उनका भरण-पोषण करें और उन्हें मूल्यवान समझें (5:25-29)। यही मूल्य देने वाला, पालन-पोषण करने वाला प्रेम पत्नी के अधीन रहने की प्रेरणा है – कोई अधिकार का पदानुक्रम नहीं (5:23)।

बाइबल इसका समर्थन करती है कि स्त्रियाँ घर में अगुवाई करें। पौलुस अपने बच्चों के संबंध में पतियों और पत्नियों को बराबर मानता है (इफिसियों 6:1-2; कुलुस्सियों 3:20) और पत्नियों से कहता है कि वे "अपने घर पर शासन करें" (शाब्दिक रूप से: "घर की स्वामिनी बनें", यूनानी: oikodespoteo, 1 तीमुथियुस 5:14)। यदि यह घर में अगुवाई नहीं है, तो और क्या है?

3.4 पौलुस और स्त्रियाँ: पितृसत्ता का समर्थक?

यद्यपि पौलुस अनेक बार लिंगों की समानता की पुष्टि करता है, फिर भी यह धारणा हठपूर्वक बनी हुई है कि वह कलीसिया में पुरुषों के शासन का पक्ष लेता है। आखिर क्यों? सबसे पहले कुछ थोड़े-से स्थानों की लोकप्रिय व्याख्याओं के कारण: 1 तीमुथियुस 2:12 ("मैं कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए"); 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1 (केवल पुरुष अध्यक्ष निर्धारित हैं); और 1 कुरिन्थियों 14:34-35 ("स्त्रियाँ कलीसिया की सभा में चुप रहें")। आगे का विश्लेषण इन पदों की प्रचलित व्याख्याओं की भूलों को उजागर करता है और दिखाता है कि पौलुस लिंगों की समानता का एक सुसंगत समर्थक है।

3.4.1 1 तीमुथियुस 2:12

क्या 1 तीमुथियुस 2:12 स्त्रियों को सिखाने या पुरुषों पर अधिकार चलाने से मना करता है? नहीं, वास्तव में नहीं। पौलुस 1 तीमुथियुस 2:11-12 में लिखता है: "स्त्रियाँ पूरी अधीनता में सीखें। मैं अनुमति नहीं देता कि कोई स्त्री सिखाए और [इसके साथ] किसी पुरुष पर अधिकार हथिया ले।"[31] व्याकरण की दृष्टि से यह निषेध उस समय की परिस्थिति से संबंधित है। पाठ में कुछ भी नहीं कहता कि यह सार्वभौमिक रूप से लागू होना चाहिए। "मैं अनुमति नहीं देता" वाक्यांश की क्रिया सार्वभौमिक निषेध के बजाय वर्तमान में लागू निषेध की ओर संकेत करती है – विशेष रूप से इस व्याकरणिक रूप में: उत्तम पुरुष, वर्तमान काल, निश्चयार्थ।

शब्दकोश BDAG[32] (पृ. 150) मुख्य क्रिया का अर्थ "स्वतंत्र अधिकार का पद हथिया लेना" बताता है। New International Version (2011 का संशोधन) में इसका सही अनुवाद "**अधिकार हथिया लेना**" किया गया है। जहाँ यह क्रिया "अधिकार हथिया लेना" के अर्थ में प्रमाणित है, वहाँ सदा अधिकार के अनधिकृत दावे की बात होती है। इस पद में "अधिकार चलाना" के लिए नए नियम का मानक शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ है। पदानुक्रम के समर्थकों की सबसे महत्वपूर्ण पुस्तक भी, इस मुख्य शब्द की अपनी जाँच में, पौलुस के समय के लिए न "अधिकार चलाना" और न "अधिकार रखना" को संभावित अर्थ के रूप में बताती है – पर "अधिकार हथिया लेना" को अवश्य बताती है।[33] अतः पौलुस स्त्रियों को पुरुषों पर अधिकार चलाने से मना नहीं करता। बल्कि वह स्त्रियों को मना करता है कि वे अनधिकृत रूप से किसी पुरुष पर अधिकार हथिया लें। इसका कारण इफिसुस में झूठी शिक्षाओं के कारण चल रहा संकट है।

इसलिए पौलुस दो बातें मना नहीं करता – कि स्त्रियाँ सिखाएँ और कि वे पुरुषों पर अधिकार हथिया लें। वह केवल एक बात मना करता है: कि स्त्रियाँ पुरुषों को सिखाने का अधिकार हथिया लें। इस पद में यूनानी oude दोनों तत्वों, "सिखाना" और "अधिकार हथिया लेना", को जोड़कर एक ही विचार व्यक्त करता है। यह इस संयोजक के पौलुस के प्रयोग की विशेषता है।[34] पर इस स्थान पर पौलुस स्त्रियों को पुरुषों को सिखाने का अधिकार हथियाने से क्यों मना करता है? वह दो कारण बताता है।

पहला: यदि स्त्रियाँ कलीसिया की अनुमति के बिना पुरुषों को सिखाने का अधिकार हथिया लेतीं, तो यह पुरुषों के प्रति अनादर था। जबकि उन्हें उनका आदर करना चाहिए था, क्योंकि पुरुष वह स्रोत है जिससे स्त्री निकली है (2:13; तुलना कीजिए 1 कुरिन्थियों 11:8, 11-12)।

दूसरा, कुछ स्त्रियों को झूठे शिक्षकों ने भटका दिया था, यहाँ तक कि वे शैतान के पीछे हो ली थीं (2:14; तुलना कीजिए 5:13-15)। पौलुस पहले ही झूठे शिक्षकों को अनधिकृत रूप से सिखाने से मना कर चुका था (1:3)। यहाँ वह इसी तरह स्त्रियों पर रोक लगाता है। वे **एकमात्र समूह हैं जिसके विषय में पौलुस कहता है कि झूठे शिक्षकों ने उसे भटका दिया है।**

1 तीमुथियुस 2:12 में पौलुस इफिसुस की प्रिस्किल्ला जैसी स्त्रियों को (जो 2 तीमुथियुस 4:19 के अनुसार इफिसुस में थी) विधिवत सौंपा गया या मान्य अधिकार ग्रहण करने से **मना नहीं करता**। आखिरकार प्रेरितों के काम प्रशंसा के साथ बताता है कि उसने अपुल्लोस को "परमेश्वर का मार्ग और भी ठीक-ठीक" समझाया (प्रेरितों के काम 18:26)। लूका और पौलुस यूनानी रीति के अनुसार इस दंपति का परिचय पति के नाम से पहले कराते हैं: अक्विला और प्रिस्किल्ला (प्रेरितों के काम 18:2; 1 कुरिन्थियों 16:19)। पर उनकी सक्रिय सेवा के विषय में हर खंड में वे – यूनानी परंपरा के विपरीत – प्रिस्किल्ला का नाम पहले लेते हैं (प्रेरितों के काम 18:18, 26; रोमियों 16:3)। इससे यह लगभग निश्चित हो जाता है कि उनकी साझा सेवा में उसकी एक महत्वपूर्ण, बल्कि शायद प्रमुख, भूमिका थी। इसलिए आश्चर्य नहीं कि पौलुस अपने सहकर्मियों की दोनों सबसे लंबी सूचियों में (2 तीमुथियुस 4:19-21 और रोमियों 16:1-16) सबसे पहले प्रिस्का को नमस्कार कहता है। ऐसा करते हुए वह उसके नाम का अधिक आदरपूर्ण रूप लेता है, जिसका वह सदा प्रयोग करता है। फीबे के साथ भी ऐसा ही है। वह पौलुस की प्रतिनिधि के रूप में रोमियों के नाम पत्री लेकर गई (रोमियों 16:1-2)। इसलिए स्वाभाविक रूप से उसने इस पत्री के विषय में रोम के मसीहियों के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। इस प्रकार वह इस पत्री की पहली व्याख्याकार थी और ऐसा करते हुए उसने वयस्क पुरुषों को भी सिखाया। **यह सब दिखाता है: 1 तीमुथियुस 2:12 प्रिस्किल्ला और फीबे जैसी स्त्रियों को, जिनके पास मान्य अधिकार था, पुरुषों को शिक्षा देने से किसी भी तरह मना नहीं कर सकता। यह**

पद केवल उन स्त्रियों को, जिनके पास मान्य अधिकार नहीं था, किसी पुरुष को सिखाने का अधिकार हथियाने से मना करता है।

3.4.2 अध्यक्षों के लिए योग्यताएँ: 1 तीमुथियुस 3 और तीतुस 1

क्या पौलुस यह निर्धारित करता है कि सब अध्यक्ष पुरुष हों? इसके विपरीत: पौलुस हर विश्वासी को उत्साहित करता है कि वह अध्यक्ष बनने का प्रयत्न करे: "यह बात सत्य है: जो कोई अध्यक्ष होना चाहता है, वह एक उत्तम काम की इच्छा करता है" (1 तीमुथियुस 3:1)। **यूनानी में "जो कोई" एक लिंग-निरपेक्ष शब्द है। इसका अर्थ है: द्वार स्त्रियों के लिए भी उतना ही खुला है जितना पुरुषों के लिए।** क्या पौलुस स्त्रियों को ऐसे पद की इच्छा करने के लिए उत्साहित करेगा जो उनके लिए वर्जित है? पौलुस स्पष्ट करता है कि "जो कोई" लगातार कर्ता बना रहता है: वह पद 5 में "कोई" को दोहराता है, और तीतुस 1:6 में अध्यक्षों की योग्यताओं की समानांतर सूची में भी "जो कोई" ही कर्ता है। **अधिकांश अनुवाद जैसा दिखाते हैं, उसके विपरीत, 1 तीमुथियुस 3:1-13 और तीतुस 1:5-9 में कलीसिया के अगुवों की योग्यताओं के यूनानी पाठ में एक भी पुल्लिंग सर्वनाम नहीं है।**

और इस बात का क्या, कि 1 तीमुथियुस 3:2, 12 और तीतुस 1:6 के अनुसार अध्यक्ष "एक ही पत्नी का पति" हो? यूनानी में शाब्दिक रूप से लिखा है "एक स्त्री का पुरुष"। इस पाठ में केवल "पुरुष" नहीं, बल्कि "एक स्त्री का पुरुष" लिखा है। पूरी अभिव्यक्ति को एक मुहावरे के रूप में समझना चाहिए। कुछ लोग इस बात पर अड़े रहते हैं कि एक शब्द "पुरुष" को अलग निकाल लें और मनमाने ढंग से संदर्भ से काट दें। इससे वे एक नई योग्यता निकालते हैं: हर अध्यक्ष को "पुरुष" होना चाहिए। यह उतना ही बेतुका है जितना यह दावा: क्योंकि "दुर्घटना करके भाग जाना" (हिट-एंड-रन) एक अपराध है, इसलिए "भाग जाना" भी अपराध होना चाहिए। अधिकांश विद्वान, पदानुक्रम के समर्थकों समेत, "एक स्त्री का पुरुष" का अर्थ यह समझते हैं कि बहुविवाही या यौन रूप से विश्वासघाती पुरुष अध्यक्ष के कार्य से बाहर रखे जाते हैं।[35]

फिर भी कुछ लोग इस पर अड़े रहते हैं कि यह स्थान इसके अतिरिक्त स्त्रियों को भी बाहर रखता है। पर इस मुहावरे में दोहरा अर्थ नहीं पढ़ा जा सकता: एक ओर बहुविवाहियों को बाहर रखना, दूसरी ओर यह सामान्य माँग कि अध्यक्ष पुरुष हों। यह उचित नहीं है। इसी तर्क से अध्यक्षों के लिए पौलुस की अधिकांश दूसरी योग्यताएँ, जो कई शब्दों से बनी हैं, बेतुकी हो जाएँगी। क्या सब अध्यक्षों का दासों समेत "अपना घराना" और कई "बच्चे" होने चाहिए, जो "विश्वास करने" और "पूरी गंभीरता से" अधीन रहने के लिए पर्याप्त बड़े हों? **क्योंकि 1 तीमुथियुस 3:11 में स्त्री सेवकों (डीकनों) की योग्यताएँ बताई गई हैं, इसलिए 3:12 में सेवकों (डीकनों) की योग्यताओं में वही अभिव्यक्ति "एक स्त्री का पुरुष" स्त्रियों को बाहर नहीं रख सकती।** इसलिए "एक स्त्री का पुरुष" में यह माँग पढ़ना कि अध्यक्ष पुरुष हों, मनमाना और अनुचित है।[36]

यूनानी में यह बिलकुल सामान्य है कि जब पुरुषों और स्त्रियों से बने समूह की बात हो, तो व्याकरण की दृष्टि से पुल्लिंग रूपों का प्रयोग किया जाए।[37] पितृसत्ता का समर्थन करने वाले एक उत्कृष्ट पास्टर और प्राध्यापक बताते हैं: पूरी बाइबल में पुरुषों को दिए गए निषेध सामान्यतः स्त्रियों पर भी लागू होते हैं। वे समझाते हैं: "जैसा सामान्य रूप से माना जाता है, ... पुरुष-प्रधान भाषा का प्रयोग करने वाले नियमों की व्याख्या सामान्यतः इस तरह की जानी चाहिए कि उनमें दोनों लिंग शामिल हों – जब तक कि कोई और बात इसके विरुद्ध न हो।"[38] मरकुस 10:12 में व्यवस्थाविवरण 24 की यीशु द्वारा की गई व्याख्या इसकी पुष्टि करती है। एकविवाह का सिद्धांत, जो "एक स्त्री का पुरुष" में व्यक्त होता है, पुरुषों और स्त्रियों पर समान रूप से लागू होता है, ठीक वैसे ही जैसे "तू अपने पड़ोसी की स्त्री का लालच न करना" (निर्गमन 20:17) समान रूप से उस पुरुष या स्त्री पर लागू होता है जो पड़ोसी के जीवन-

साथी का लालच करता है। इसलिए "एक स्त्री का पुरुष" का सबसे सटीक और सबसे शाब्दिक अनुवाद "**एकविवाही**" है। यह अनुवाद सबसे अच्छी तरह व्यक्त करता है कि यूनानी में पुल्लिंग रूप सामान्यतः दोनों लिंगों को शामिल करते हैं। और यह पद 12 में इस मुहावरे के स्वाभाविक अर्थ को ठीक पकड़ता है।

3.4.3 1 कुरिन्थियों 14:34-35

तो 1 तीमुथियुस 2 सब स्त्रियों को सिखाने या पुरुषों पर अधिकार चलाने से मना नहीं करता, और 1 तीमुथियुस 3 तथा तीतुस 1 स्त्रियों को प्राचीन होने से मना नहीं करते। पर क्या 1 कुरिन्थियों 14:34-35 स्त्रियों को आज्ञा देता है कि वे कलीसिया में चुप रहें? हाँ। वास्तव में पूरी बाइबल में यह एकमात्र आज्ञा है कि स्त्रियाँ चुप रहें। इन पदों का स्पष्ट कथन तीन बार दोहराया गया है – अधिक से अधिक ज़ोर के साथ: "स्त्रियाँ कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बात करने की अनुमति नहीं ... स्त्री का कलीसिया में बोलना लज्जा की बात है।" पद 35 तो एक सम्मानित स्त्री को, एक पत्नी को, उस सबसे उचित रूप से भी मना करता है जिसमें कोई स्त्री कलीसिया में बोल सकती है: प्रश्न पूछना, क्योंकि वह कुछ सीखना चाहती है। इससे स्पष्ट है: यह निषेध कलीसिया की सार्वजनिक सभाओं में सब स्त्रियों के हर प्रकार के बोलने पर लागू होता है। यह केवल एक सीमित प्रतिबंध नहीं है। यह प्राचीन संसार की प्रचलित धारणा के अनुरूप था, जैसी वह यहूदियों, यूनानियों और रोमियों में फैली हुई थी।[39] पर यदि पौलुस ने यह आदेश दिया, तो वह लिंगों की समानता का सुसंगत समर्थक कैसे हो सकता है? क्या यह पौलुस को – और स्वयं बाइबल को – असंगत या परस्पर विरोधी नहीं बना देता?

ये पद सदियों से विद्वानों के लिए पहेली बने हुए हैं, आरंभिक कलीसिया के पिताओं के लिए भी। क्योंकि ये उसी अध्याय के उन कथनों का स्पष्ट रूप से खंडन करते हैं कि "सब" सिखा और भविष्यद्वाणी कर सकते हैं (पद 5, 24, 26, 31, तुलना कीजिए 39)। ये 11:5-6 का भी खंडन करते हैं, जहाँ पौलुस पुष्टि करता है कि स्त्रियाँ भविष्यद्वाणी करती हैं – इस बात का तो कहना ही क्या कि पौलुस और जगहों पर भी लिंगों की समानता का पक्ष लेता है। ये इसलिए भी रहस्यमय हैं क्योंकि "व्यवस्था" (14:34) का प्रयोग एक अपवाद है। और हर जगह, जहाँ पौलुस "व्यवस्था" का हवाला देता है, वह पुराने नियम को उद्धृत करता है – पर यहाँ नहीं। **पद 34 के दावे के विपरीत, पुराने नियम की व्यवस्था कहीं भी स्त्रियों को आराधना की सभाओं में अधीन रहने की आज्ञा नहीं देती, चुप रहने की तो बात ही क्या। इसके विपरीत: वह कई बार स्त्रियों को उत्साहित करती है कि वे परमेश्वर के वचन का सार्वजनिक रूप से प्रचार करें।** उदाहरण के लिए भजन संहिता 68:12 में (इब्रानी पाठ की गिनती के अनुसार; हिंदी बाइबल में 68:11) लिखा है: "प्रभु ने वचन सुनाया; उसका प्रचार करने वाली स्त्रियों का बड़ा दल है।" क्योंकि 1 कुरिन्थियों 14:34-35 अपने निकट संदर्भ में और अन्य स्थानों पर बाइबल की शिक्षा का खंडन करता है, इसलिए स्त्रियों के लिए कलीसिया में बोलने के इस असीमित निषेध ने लगभग दो हज़ार वर्षों तक पाठकों को उलझन में डाले रखा है।

बहुत-से विद्वान 1 कुरिन्थियों 14:34-35 को पौलुस की आज्ञा मानते हैं। पौलुस (और बाइबल) को विरोधाभास से मुक्त करने के लिए उन्होंने व्याख्याओं की एक बड़ी भरमार प्रस्तावित की है, जो चुप रहने की तिहरी माँग को सीमित करने के लिए हैं। इनमें से हर एक पाठ के स्पष्ट अर्थ का खंडन करती है। वे मना किए गए बोलने को किसी विशेष प्रकार के बोलने तक सीमित करने का प्रयत्न करती हैं, जैसे भविष्यद्वाणियों को परखना, बाधा डालने वाली बकबक, अन्य भाषाओं में बोलना, सिखाना या भविष्यद्वाणी। ये संकीर्ण व्याख्याएँ "चुप रहना" और "बोलना" शब्दों के व्यापक अर्थ से मेल नहीं खातीं, जो पाठ में बिना किसी सीमा के आए हैं। वे पद 35 में दिए गए मना किए गए बोलने के उदाहरण से भी मेल नहीं खातीं: पत्नियाँ, जो प्रश्न पूछती हैं क्योंकि वे कुछ सीखना चाहती हैं। बोलने का

ठीक यही प्रकार, जिसे पद 35 स्पष्ट रूप से मना करता है, ये संकीर्ण व्याख्याएँ अनुमत कर देती हैं! अतः "बोलना" का अर्थ भविष्यद्वाणियों को परखना, बाधा डालने वाली बकबक, अन्य भाषाओं में बोलना, सिखाना या भविष्यद्वाणी जैसी बातों तक सीमित नहीं किया जा सकता। **इसके अतिरिक्त, मना किए गए बोलने को सीमित करने का हर प्रयास इस खंड में चुप रहने की तिहरी (और इसलिए अधिकतम) असीमित माँग का खंडन करता है।**

इसलिए मना किए गए बोलने को सीमित करने के सब प्रयास विफल होते हैं। तब पद 34-35 का इस बात से कैसे मेल बैठाया जाए कि पौलुस उसी अध्याय में और अध्याय 11 में बार-बार पुष्टि करता है कि स्त्रियाँ भविष्यद्वाणी कर सकती हैं, और कि वह और जगहों पर भी लिंगों की समानता का पक्ष लेता है? सबसे अच्छा उत्तर इस खोज से मिलता है कि ये पद मूल रूप से पद 33 के बाद अपने वर्तमान स्थान पर नहीं थे। यह सबसे प्राचीन हस्तलिपियों से पता चलता है। "पश्चिमी" पाठ की सब यूनानी हस्तलिपियों में पद 34-35 पद 40 के बाद आते हैं।[40] बाकी हस्तलिपियों में वे पद 33 के बाद आते हैं। किसी प्रतिलिपिकार के लिए इन पदों को पद 33 से पद 40 के बाद या इसका उल्टा खिसकाना बिलकुल असामान्य और अप्रचलित होता।

पौलुस की पत्रियों की एक भी हस्तलिपि में तुलनीय लंबाई का कोई खंड बिना किसी पहचाने जा सकने वाले कारण के इतनी दूर नहीं खिसकाया गया। इसके विपरीत यह बात सामान्य थी: यदि किसी प्रतिलिपिकार ने देखा कि नकल करते समय उससे भूल से कोई शब्द या वाक्य छूट गया है, तो वह उस पाठ को हाशिये पर जोड़ देता था। उदाहरण के लिए कोडेक्स वैटिकनस (Codex Vaticanus) में मत्ती रचित सुसमाचार में बीस स्थान ऐसे हैं जहाँ प्राचीन अन्शियल लिपि में पाठ हाशिये पर लिखा है। उतना ही सामान्य दूसरा कदम भी था: जो नए नियम की किसी हस्तलिपि की नकल करता था, वह हाशिये पर मिले पाठ को मुख्य पाठ में वहाँ रख देता था जहाँ उसकी राय में वह सबसे अच्छी तरह बैठता था। इसी तरह आज भी कोई सचिव, जो किसी सुधारे हुए पत्र को फिर से टाइप करती है, हाशिये की टिप्पणियों को पत्र के पाठ में डाल देती है। इस प्रथा का प्रमाण नेस्ले-आलांड 28 (Nestle-Aland 28) संस्करण देता है: वैटिकनस के इन बीस हाशिया-पाठों में से सत्रह मत्ती की लगभग सभी उपलब्ध हस्तलिपियों में मुख्य पाठ में हैं। इसलिए तथाकथित प्रतिलिपि-संभाव्यता – अर्थात् यह प्रश्न कि किसी प्रतिलिपिकार ने सबसे अधिक संभवतः क्या किया होगा – इस बात के पक्ष में है: किसी ने स्त्रियों के चुप रहने की आज्ञा पहले किसी हस्तलिपि के हाशिये पर लिखी। बाद के प्रतिलिपिकारों ने उसे या तो पद 33 के बाद या पद 40 के बाद पाठ में जोड़ दिया।[41] अंततः सामान्य बुद्धि भी यही कहती है कि कोई सामान्य बात किसी ऐसी असाधारण बात से अधिक संभावित है जिसका कोई और उदाहरण मौजूद नहीं।

क्योंकि यह एक हाशिया-पाठ है, इसलिए इसका अर्थ संदर्भ से निर्धारित नहीं होता, और इसका उद्देश्य पहचानना अधिक कठिन है। विशेष रूप से, हम नहीं जानते कि हाशिये का यह पाठ कोई ऐसी बात कहता है जिसकी पौलुस पुष्टि करता है या जिसका खंडन करता है। इससे यह स्वभाव से ही धर्मवैज्ञानिक या व्यावहारिक तर्कों के लिए एक कम ठोस आधार बन जाता है। **संभव है कि यह वही झूठी भविष्यद्वाणी हो जो पौलुस के मन में थी, जब उसने ठीक इसी संदर्भ में "जो कोई अपने आप को भविष्यद्वक्ता समझे" की बात की (पद 37)।** यह असंभावित है कि पौलुस ने 14:34-35 को अपने हाथ से हाशिये पर लिखा। क्योंकि उसकी बड़ी लिखावट के कारण एक सामान्य हाशिये में इतना पाठ नहीं समाता (गलातियों 6:11; 2 थिस्सलुनीकियों 3:17)। फिर भी, यह हो सकता है कि उसने अपने लेखक को पाठ हाशिये पर लिखने का निर्देश दिया हो। उस समय एक भारी सांस्कृतिक सहमति थी: स्त्रियों को सार्वजनिक रूप से नहीं बोलना चाहिए। इसलिए लगभग कोई भी पाठक पद 34-35 को हाशिये पर लिख सकता था। ऐसा करके वह रोकना चाहता होगा कि पौलुस का बार-बार दिया गया यह आह्वान, कि सब भविष्यद्वाणी करें, स्त्रियों पर भी लागू हो। ये शब्द हाशिये पर किसने, क्यों और कब लिखे, इसका हम केवल

अनुमान लगा सकते हैं। इसलिए यह संदिग्ध है कि वे पौलुस के हैं – और यदि हैं, तो वह उनसे सहमत है या उन्हें अस्वीकार करता है। **इसलिए इस आज्ञा का, कि स्त्रियाँ कलीसिया में चुप रहें, किसी मानक धर्मविज्ञान या कलीसियाई व्यवहार की नींव रखने के लिए उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। वास्तव में बाइबल अनुवादों के लिए सबसे उचित यही होगा कि इस हाशिया-टिप्पणी को वहीं रखा जाए जहाँ से इसका उद्गम लगभग निश्चित है: हाशिये पर, अधिमानतः एक फ़ुटनोट में।**

कुछ लोग यह सुनकर घबरा सकते हैं कि इन पदों को हाशिये पर रखा जाए। उन्हें डर है कि इससे सौंपे गए पाठ की विश्वसनीयता पर भरोसा कमज़ोर हो सकता है। पर यह चिंता निराधार है। 1 कुरिन्थियों 14:34-35 एक अनोखा मामला है – पौलुस की पत्रियों में एकमात्र स्थान, जहाँ इतना बड़ा पाठ-खंड अलग-अलग हस्तलिपियों में एक दूसरे से इतनी दूर के स्थानों पर आता है, और इसकी कोई विश्वसनीय व्याख्या नहीं है। इसलिए हस्तलिपियों के वे प्रमाण, जो यहाँ हाशिया-पाठ के पक्ष में हैं, पवित्रशास्त्र के किसी और खंड को भी हाशिया-पाठ मानने को उचित नहीं ठहराते।

पवित्रशास्त्र की त्रुटिहीनता[42] को मानने वाले अधिकांश विद्वानों का मत है कि कुछ अंश मूल रूप से पाठ में नहीं थे, चाहे वे बहुत-सी बाइबलों में छपे हों। इसलिए प्रश्न यह नहीं कि क्या कभी पदों को हाशिये पर रखना चाहिए, बल्कि यह कि क्या इस विशेष मामले में ऐसा करना उचित है। पदानुक्रम के समर्थक भी स्वीकार करते हैं कि कुछ खंड – लंबे खंड भी – मूल पाठ के नहीं हैं। उदाहरण के लिए व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री का वृत्तांत (यूहन्ना 7:53–8:11) इनमें गिना जाता है।[43] यह आज्ञा, कि स्त्रियाँ कलीसिया में चुप रहें, यूहन्ना 7:53–8:11 के साथ बहुत-सी समानताएँ रखती है, जो संकेत देती हैं कि यह भी पाठ का भाग नहीं है।[44] इस धारणा के लिए, कि स्त्रियों के चुप रहने वाला खंड बाद में जोड़ा गया, व्यभिचारिणी के वृत्तांत से भी अधिक स्पष्ट प्रमाण हैं।[45] इन सब प्रमाणों को देखते हुए यह शायद ही आश्चर्य की बात है कि जे. ए. फिट्ज़मायर (J. A. Fitzmyer) के अनुसार **"आज के अधिकांश व्याख्याकार" 1 कुरिन्थियों 14:34-35 को बाद का जोड़ मानते हैं। इनमें गॉर्डन फ़ी (Gordon Fee) जैसे अग्रणी सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) पाठ-आलोचक भी शामिल हैं।**[46]

हो सकता है कि पौलुस ने फिर भी अपने लेखक को पद 34-35 हाशिये पर लिखने का निर्देश दिया हो। तब इन पदों और उसकी शिक्षा के बीच के विरोधाभास दिखाते हैं: उसने संभवतः ऐसा इसलिए किया ताकि उस झूठी भविष्यद्वाणी की विषय-वस्तु को दर्ज करे जो उसके मन में थी, जब उसने ठीक इसके बाद पद 36-37 में डाँटा: "क्या परमेश्वर का वचन तुम में से निकला?" और "यदि कोई अपने आप को भविष्यद्वक्ता या आत्मिक जन समझे, तो यह जान ले कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूँ, वे प्रभु की आज्ञाएँ हैं"। पाठ चाहे किसी ने भी और किसी भी कारण से लिखा हो: 1 कुरिन्थियों 14:34-35 लगभग निश्चित रूप से पहले हाशिये पर लिखा गया था। और बहुत संभव है कि यह पौलुस के अतिरिक्त किसी और का बाद का जोड़ है। इसलिए यह स्थान स्त्रियों को कलीसिया में बोलने से मना करने के लिए एक संदिग्ध आधार है।

3.5 निष्कर्ष

पुरुषों और स्त्रियों की समानता के विषय में पवित्रशास्त्र के कथन और उन स्त्रियों के विषय में कथन, जिन्हें परमेश्वर ने पुरुषों के साथ या उनके ऊपर अधिकार चलाने के लिए बुलाया है, स्पष्ट और अनेक हैं। जो इन सब का इनकार करने का प्रयत्न करता है, वह उस मनुष्य के समान है जो हिमस्खलन की चपेट में आ जाता है और सोचता है: "मैं हर चट्टान और बर्फ़ के हर ढेले से, एक-एक करके, बच निकलूँगा। मुझे कोई नहीं लगेगा।" पूरे हिमस्खलन से कोई बच नहीं सकता। उसी तरह उस बात से भी बचा नहीं जा सकता जो पवित्रशास्त्र कुल मिलाकर पुरुषों और

स्त्रियों के परमेश्वर द्वारा दिए गए समान पद और अधिकार के विषय में कहता है। बाइबल पुरुषों और स्त्रियों दोनों को सिखाती है कि वे नम्रता में अधिकार का प्रयोग करें, जैसे आत्मा उनकी अगुवाई करे और जैसी मसीह ने आज्ञा दी है। कलीसिया के जीवन में पुरुषों और स्त्रियों की समानता के बाइबल के प्रमाण निर्विवाद हैं। यह समानता केवल ऊपर चर्चा किए गए उन स्थानों में ही नहीं दिखती जो स्पष्ट रूप से स्त्रियों के विषय में हैं। यह हर "एक दू-सरे"-वाले स्थान में और बाइबल की लगभग हर आज्ञा और हर प्रोत्साहन में व्याप्त है। उसके कथन और उसकी कहानियाँ हम सब के लिए हैं, और परमेश्वर चाहता है कि हम पूरे हृदय से और बिना किसी आपत्ति के उनके अनु-सार जीएँ – इस डर के बिना कि हम लिंगों की भूमिकाओं के लिए मनुष्यों द्वारा बनाई गई किसी ऐसी सीमा को पार कर देंगे जो बाइबल की शिक्षा के लिए पराई है।

लेखक

PHILIP B. PAYNE (फिलिप बी. पेन), कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से नए नियम में पीएचडी, नए नियम की पाठ-आलोचना पर, यीशु के दृष्टांतों पर अपने शोध-कार्यों के लिए और अपनी पुस्तक Man and Woman, One in Christ (Zondervan, 2009) के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने नए नियम के विभाग में इन शिक्षण संस्थानों में पढ़ाया है: University of Cambridge, Trinity Evangelical Divinity School, Gordon-Conwell Theological Seminary, Bethel Seminary और Fuller Seminary Northwest।



4 पुस्तकों की अनुशंसा

4.1 जर्मन भाषा की पुस्तकें

कुछ पुस्तकें (इस समय) केवल पुरानी पुस्तकों की दुकानों पर ही मिलती हैं।

Bielefeld, Frauke. Die Sache mit der Rippe: Die himmlische Idee von den Geschlechtern. Asslar, 2007.

Bushnell, Katharine C. Wach auf Eva! Erkenne die biblische Wahrheit von Gottes ursprünglicher und unveränderter Absicht der vollen Gleichstellung der Frau. मँगवाने के लिए: christian@rvbeese.de

Cunningham, Loren और David Joel Hamilton. Warum nicht! Frauen in christlich-kirchlichen Führungspositionen. Altensteig, 2014.

Haubeck, Wilfrid और Wolfgang Heinrichs (सं.). Pastorinnen: Aspekte zu einem aktuellen Thema. Theologische Impulse. Witten: Bundes-Verlag, 2008.

Krüger, Hartmut. Frauen im Pietismus: Ihr Dienst – ihre Verantwortung – ihr Einfluss. Marburg: Francke, 2005.

Ronsdorf, Hans-Jörg. Frauen, vergebt uns! (स्त्रियो, हमें क्षमा कीजिए!) Was wir Männer wiedergutmachen müssen. Zur Rolle von Frau und Mann. चौथा संस्करण 2023. www.hans-joerg-ronsdorf.de

Schirrmacher, Thomas. Paulus im Kampf gegen den Schleier. Nürnberg: VTR, 2002.

Schmalenbach, Hanna-Maria. Frausein zur Ehre Gottes – im Kontext verschiedener Kulturen. Schwarzenfeld: Neufeld, 2007.

Wunderli, Armin. “Ihm gegenüber”: Gleichberechtigung in der Kirche und was die Bibel dazu (nicht) sagt. KSH.Digital, 2022.

4.2 जर्मन भाषा के लेख

Jantsch, Torsten. “Die Frau soll Kontrolle über ihren Kopf ausüben (1Kor 11,10). Zum historischen, kulturellen und religiösen Hintergrund von 1Kor 11,2–16”. पृ. 97–144, in: Frauen, Männer, Engel: Perspektiven zu 1Kor 11,2–16. सं. Torsten Jantsch. Biblisch-Theologische Studien 152. Neukirchen-Vluyn: Neukirchener Verlag, 2015.

Herter, H. “Effeminatus”. स्तंभ 620–650, खंड 4 (1959), Reallexikon für Antike und Christentum: Sachwörterbuch zur Auseinandersetzung des Christentums mit der antiken Welt में। RAC. 31 खंड। Stuttgart: Anton Hiersemann, 1950–2021.

4.3 अंग्रेज़ी भाषा की पुस्तकें

Barr, Beth Allison. The Making of Biblical Womanhood: How the Subjugation of Women Became Gospel Truth. Grand Rapids, MI: Baker, 2021.

Bartlett, Andrew. Men and Women in Christ: Fresh Light from the Biblical Texts. London: Inter-Varsity, 2019.

Bird, Michael F. Bourgeois Babes, Bossy Wives, and Bobby Haircuts: A Case for Gender Equality in Ministry. Fresh Perspectives on Women in Ministry. Grand Rapids, MI: Zondervan, 2012.

Clouse, Bonnidell, and Robert G. Clouse, eds. Women in Ministry: Four Views. With contributions from Robert D. Culver, Susan Foh, Walter Liefeld & Alvera Mickelsen. Downers Grove, IL: InterVarsity, 1989.

Dale, Felicity. The Black Swan Effect: A Response to Gender Hierarchy in the Church. n.p.: Kingdom Heart, 2014.

Epp, Eldon Jay. Junia: The First Woman Apostle. Minneapolis, MN: Fortress, 2005.

Fee, Gordon D. The First Epistle to the Corinthians. NICNT. Grand Rapids, MI: Eerdmans, 1987, rev. ed. 2014.

Giles, Kevin. Jesus and the Father: Modern Evangelicals Reinvent the Doctrine of the Trinity. Grand Rapids, MI: Zondervan, 2006.

Gupta, Nijay K. Tell Her Story: How Women Led, Taught, and Ministered in the Early Church. Downers Grove, IL: InterVarsity, 2023.

Hill, Graham Joseph. Holding Up Half the Sky: A Biblical Case for Women Leading and Teaching in the Church. Eugene, OR: Cascade Books, 2020.

Lee, Dorothy A. The Ministry of Women in the New Testament: Reclaiming the Biblical Vision for Church Leadership. Grand Rapids, MI: Baker, 2021.

McKnight, Scot. The Blue Parakeet: Rethinking How You Read the Bible. 2nd ed. Grand Rapids, MI: Zondervan, 2018.

Mickelsen, Alvera, ed. Women, Authority & the Bible. Downers Grove, IL: InterVarsity, 1986.

Osiek, Carolyn and Margaret Y. MacDonald with Janet H. Tulloch. A Woman's Place: House Churches in Earliest Christianity. Minneapolis, MN: Fortress, 2006.

Peppiatt, Lucy. Rediscovering Scripture's Vision for Women: Fresh Perspectives on Disputed Texts. Downers Grove, IL: IVP Academic, 2019.

Peppiatt, Lucy. Women and Worship at Corinth: Paul's Rhetorical Arguments in 1 Corinthians. Eugene, OR: Cascade Books, 2015.

Payne, Philip B. The Bible vs. Biblical Womanhood: How God's Word Consistently Affirms Gender Equality. Grand Rapids, MI: Zondervan, 2023. 249 pages.

Payne, Philip B. Man and Woman, One in Christ: An Exegetical and Theological Study of Paul's Letters. Grand Rapids, MI: Zondervan, 2009. 511 pages.

Payne, Philip B., and Vince Huffaker. Why Can't Women Do That? Breaking Down the Reasons Churches Put Men in Charge. Boulder, CO: Vinati Press, 2021. 175 pages.

Pierce, Ronald W., Cynthia Long Westfall, and Christa L. McKirland, eds. Discovering Biblical Equality: Biblical, Theological, Cultural & Practical Perspectives. 3rd ed. Downers Grove, IL: IVP Academic, 2021.

Williams, Terran. How God Sees Women: The End of Patriarchy. Cape Town, South Africa: Spiritual Bakery, 2022.

Witherington, Ben, III. Women and the Genesis of Christianity. Cambridge: Cambridge University Press, 1990.

Witt, William G. Icons of Christ: A Biblical and Systematic Theology for Women's Ordination. Waco, TX: Baylor University Press, 2020.

4.4 अंग्रेज़ी भाषा के लेख

Davids, Peter H. "A Silent Witness in Marriage." Pages 224–238 in Discovering Biblical Equality: Complementarity Without Hierarchy. Edited by Ronald W. Pierce and Rebecca Merrill Groothuis. Downers Grove, IL: InterVarsity, 2004.

Giles, Kevin. "The Genesis of Confusion: How 'Complementarians' Have Corrupted Communication." Priscilla Papers 29, 1 (2015): 22–29.

Hugenberger, Gordon P. "Women in Church Office: Hermeneutics or Exegesis? A Survey of Approaches to 1 Tim 2:8–15." Journal of the Evangelical Theological Society 35, 3 (September 1992): 341–360.

Kroeger, Catherine Clark. "The Classical Concept of Head as 'Source'." Pages 267–283 in Gretchen Gaebelein Hull, Equal to Serve: Women and Men in the Church and Home. Old Tappan, NJ: Revell, 1987.

Payne, Philip B. "1 Tim 2.12 and the Use of οὐδέ to Combine Two Elements to Express a Single Idea." New Testament Studies 54, 2 (2008): 235–253. https://www.pbpayne.com/wp-admin/Payne2008NTS-oude1Tim2_12.pdf

Payne, Philip B. "The Authenticity of the Parable of the Sower and its Interpretation." Pages 163–207 in Gospel Perspectives: Studies of History and Tradition in the Four Gospels. Edited by R. T. France and David Wenham. Sheffield: JSOT, 1980.

Payne, Philip B. "The Authenticity of the Parables of Jesus." Pages 329–344 in Gospel Perspectives II. Edited by R. T. France and David Wenham. Sheffield: JSOT, 1981.

Payne, Philip B. “A Critique of Thomas R. Schreiner’s Review of Man and Woman, One in Christ.” https://www.pbpayne.com/a-critique-of-thomas-r-schreiners-review-of-man-and-woman-one-in-christ/

Payne, Philip B. “Critique of Vaticanus Distigme-obelos Denials.” https://www.pbpayne.com/critique-of-vaticanus-distigmeobelos-denials/

Payne, Philip B. “Fuldensis, Sigla for Variants in Vaticanus, and 1 Cor 14.34–5.” New Testament Studies 41 (1995): 240–262. https://www.pbpayne.com/wp-admin/Payne1995NTSFuldensis.pdf manuscript photographs https://www.pbpayne.com/wp-content/uploads/2023/03/Fuldensis-1-Cor-14–15-photosscaled.jpeg https://www.pbpayne.com/wp-content/uploads/2023/03/Vaticanus-1-Cor-14.33–36-Jn-7.52-8.12–13-photos-scaled.jpeg

Payne, Philip B. “The Interpretation of 1 Timothy 2:11–15: A Surrejoinder.” Pages 96–115 in Part II of What Does the Scripture Teach About the Ordination of Women? A study commissioned by the Committee on Ministerial Standing. Minneapolis, MN: The Evangelical Free Church of America, 1986. https://www.pbpayne.com/wp-content/uploads/2020/07/Payne-Moo-Surrejoinder-EFCA-Ministerial.pdf

Payne, Philip B. “Is 1 Corinthians 14:34–35 a Marginal Comment or a Quotation? A Response to Kirk MacGregor.” Priscilla Papers 33, 2 (Spring 2019): 24–30. https://www.pbpayne.com/wp-content/uploads/2021/10/Is-1-Cor-14.34-35-Marginal-Comment-or-Quotation.pdf

Payne, Philip B. “Libertarian Women in Ephesus: A Response to Douglas J. Moo’s Article, ’1 Timothy 2:11–15: Meaning and Significance.’ ” Trinity Journal 2 (1981): 169–197.

Payne, Philip B. “Ms. 88 as Evidence for a Text Without 1 Cor 14.34–5.” New Testament Studies 44 (1998): 152–158. https://www.pbpayne.com/wp-admin/Payne1998NTSMS88.pdf

Payne, Philip B. “Οὐδέ Combining Two Elements to Convey a Single Idea and 1 Timothy 2:12: Further Insights.” Pages 24–34 in Missing Voices. Minneapolis: CBE International, 2015. https://www.pbpayne.com/wp-content/uploads/2015/07/Payne-OUDE-CBE-ETS-final.pdf

Payne, Philip B. “The Seeming Inconsistency of the Interpretation of the Parable of the Sower.” New Testament Studies 26 (1979–1980): 564–568.

Payne, Philip B. “The Text-Critical Function of the Umlauts in Vaticanus, with Special Attention to 1 Corinthians 14.34–35: A Response to J. Edward Miller.” Journal for the Study of the New Testament 27, 1 (2004): 105–112.

Payne, Philip B. “Vaticanus Distigme-obelos Symbols Marking Added Text Including 1 Corinthians 14.34–5.” New Testament Studies 63, 4 (October 2017): 604–625. https://www.cambridge.org/core/journals/new-testament-studies/article/vaticanus-

distigmeobelos-symbols-markingadded-text-including-1-corinthians-14345/A5FC01A6E14A2A1CF1F514A9BF93C581

Payne, Philip B. “What About Headship? From Hierarchy to Equality.” Pages 140–161, 226–232 in Mutual by Design: A Better Model for Christian Marriage. Edited by Elizabeth Beyer. Minneapolis: CBE International, 2017. https://www.pbpayne.com/wp-content/uploads/2018/06/what-about-headship-ch7.pdf

Payne, Philip B. “What Does Kephale Mean in the New Testament? Response.” Pages 118–132 in Women, Authority & the Bible. Edited by Alvera Mickelsen. Downers Grove, IL: InterVarsity, 1986.

Payne, Philip B. “Wild Hair and Gender Equality in 1 Corinthians 11:2–16.” Priscilla Papers 20, 3 (Summer 2006): 9–18. https://www.pbpayne.com/wp-admin/Payne2006PP1Cor11_2-16.pdf

Payne, Philip B. and Paul Canart. “Distigmai Matching the Original Ink of Codex Vaticanus: Do They Mark the Location of Textual Variants?” Pages 199–226 in Le manuscrit B de la Bible (Vaticanus graecus 1209): Introduction au fac-similé, Actes du Colloque de Genève (11 juin 2001), Contributions supplémentaires. Edited by Patrick Andrist. Lausanne, Switzerland: Éditions du Zèbre, 2009. https://www.pbpayne.com/wp-content/uploads/2010/07/HTB07_199_226.pdf

Payne, Philip B. and Paul Canart. “The Originality of Text-Critical Symbols in Codex Vaticanus.” Novum Testamentum 42, 2 (2000): 105–113. https://www.pbpayne.com/wp-admin/Payne2000NovT-Vaticanus_umlauts_1Cor14_34-35.pdf

Schmid, Ulrich. “Conceptualizing ‘Scribal’ Performances: Reader’s Notes.” Pages 49–64 in The Textual History of the Greek New Testament: Changing Views in Contemporary Research. Edited by Klaus Wachtel and Michael W. Holmes. Atlanta: SBL, 2011.

Spencer, Aída Besançon. “Leadership of Women in Crete and Macedonia as a Model for the Church.” Priscilla Papers 27, 4 (Autumn 2013): 5–15.

Thompson, Cynthia L. “Hairstyles, Head-coverings, and St. Paul: Portraits from Roman Corinth.” Biblical Archaeologist 51, 2 (June 1988): 99–115.

“स्त्रियो, हमें क्षमा कीजिए!” (Frauen, vergebt uns!) – हम पुरुषों को क्या सुधारना है।

चौथा संस्करण (जुलाई 2023), लगभग 300 पृष्ठ, पेपरबैक 13.80 €, पुस्तक-विक्रेताओं से ISBN 978-3-9820715-5-8 के द्वारा या लेखक से मँगवाई जा सकती है (जर्मन में):

hj-ronsdorf@t-online.de या यहाँ: www.hans-joerg-ronsdorf.de

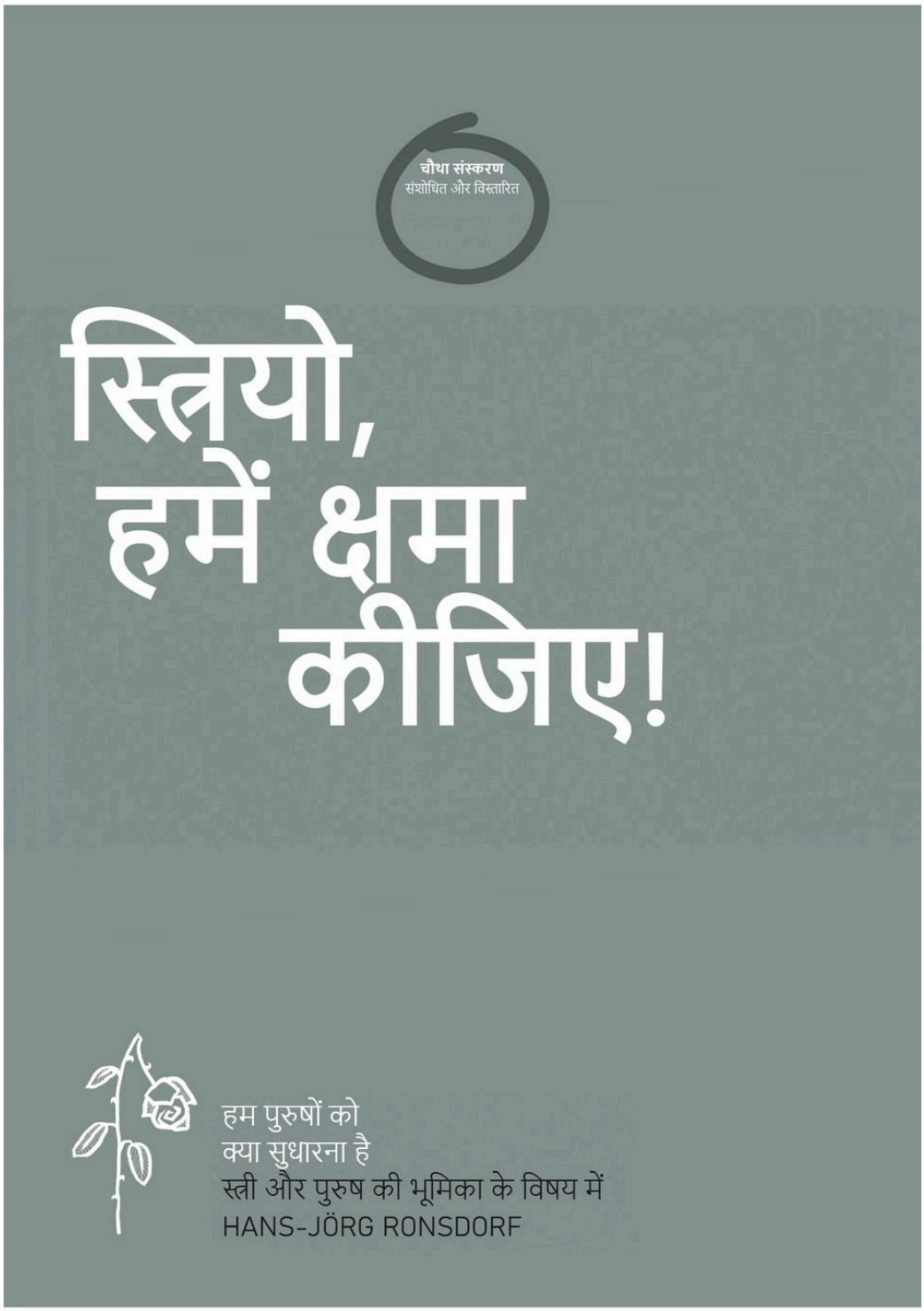

पुस्तक "स्त्रियो, हमें क्षमा कीजिए!" का संक्षिप्त संस्करण (तीसरा संस्करण, 80 पृष्ठ) पेपरबैक के रूप में 3.80 € में लेखक से, और Kindle ई-बुक के रूप में Amazon पर 2.90 € में उपलब्ध है (जर्मन में)। अधिक जानकारी: www.hans-joerg-ronsdorf.de।

संक्षिप्त
संस्करण

स्त्रियो, हमें क्षमा कीजिए!



विवाह और कलीसिया में पुरुष
और स्त्री
संक्षिप्त। स्पष्ट। सहायक।
HANS-JÖRG RONSDORF



कैथरीन सी. बुशनेल (Katharine C. Bushnell) (1855–1946) परमेश्वर की एक साहसी और प्रतिभाशाली सेविका थीं, जिन्होंने इस पद को अपने जीवन का आदर्श-वाक्य बना लिया था: "जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।" वे चिकित्सक, मिशनरी, क्रूस की राजदूत, सुधारक, लेखिका और वक्ता थीं, और साथ ही एक प्रतिभाशाली और मौलिक विदुषी, जो सात भाषाएँ बोलती थीं और प्राचीन यूनानी तथा इब्रानी पर अधिकार रखती थीं। बुशनेल ने चिकित्सा का काम छोड़ दिया, ताकि वह करें जिसे वे और भी महत्वपूर्ण काम मानती थीं, अर्थात् 19वीं सदी के स्त्री-आंदोलन के Woman's Christian Temperance Union (WCTU) में एक प्रमुख भूमिका निभाकर लोगों की अपमानजनक जीवन-परिस्थितियों को बदलना। बाइबल में स्त्रियों का स्थान बुशनेल के लिए बहुत

महत्वपूर्ण था, क्योंकि वे इस निष्कर्ष पर पहुँचीं कि स्त्रियों की सामाजिक और आत्मिक अधीनता के लिए गलत अनुवाद ज़िम्मेदार थे। 1896 में उन्होंने WCTU छोड़ दिया, ताकि अपने शेष वर्ष लिखने में और स्त्री की पूर्ण समानता के विषय में परमेश्वर के मूल और अपरिवर्तित उद्देश्य के बाइबल के सत्य को आगे पहुँचाने में लगाएँ।

पुस्तक-विक्रेताओं से या प्रकाशक से उपलब्ध (जर्मन में): christian@rvbeese.de

---

टिप्पणियाँ

1. Man and Woman, One in Christ: An Exegetical and Theological Study of Paul's Letters, 2009; Why Can't Women Do That? Breaking Down the Reasons Churches Put Men in Charge, 2021; The Bible vs. Biblical Womanhood: How God's Word Consistently Affirms Gender Equality, 2023 ("पुस्तकों की अनुशंसा" के अंतर्गत भी देखिए, पृ. 46)।
2. Vol 29, Nr.1, शीतकाल 2015।
3. चौथी सदी में लौदीकिया की महासभा का नियम (कैनन) XI। अन्य बाइबल-बाह्य स्रोतों में भी presbytidas उन स्त्रियों को दर्शाता है जो प्राचीन हैं: अप्रामाणिक मत्ती के काम (28) में और तीसरी और चौथी सदी के शिलालेखों में ("Angelos Epiktous Presbytidos" और "स्त्री प्राचीन", gynaikôn presbytidôn)। Bernadette J. Brooten, Women Leaders in the Ancient Synagogue: Inscriptional Evidence and Background Issues (प्राचीन आराधनालय में अगुवाई के पदों पर स्त्रियाँ: शिलालेखों से प्रमाण और पृष्ठभूमि के प्रश्न), BJS 36 (Atlanta: Scholars Press, 1982), पृ. 41–46, ऐसे छह शिलालेख उद्धृत करती हैं जिनमें स्त्री प्राचीनों का उल्लेख है, जैसे: "यहाँ सारा उरा (Sara Ura), प्राचीन, विश्राम करती है"। ये उदाहरण दिखाते हैं कि पौलुस स्त्री प्राचीनों की ओर संकेत कर सकता था और कि कलीसिया के इतिहास में आरंभ में ही स्त्री प्राचीन थीं। तुलना कीजिए Philip B. Payne, The Bible vs. Biblical Womanhood (Grand Rapids, MI: Zondervan, 2023), पृ. 163–164।
4. "1 Timothy 2:11-15: Meaning and Significance", Trinity Journal 1 (1980), पृ. 62–83।
5. Philip B. Payne, "Libertarian Women in Ephesus: A Response to Douglas J. Moo's Article, '1 Timothy 2:11-15: Meaning and Significance'", Trinity Journal 2 (1981), पृ. 169–197।
6. या समान अधिकार, समान दर्जा, समान मूल्य
7. Philip B. Payne, Man and Woman, One in Christ (Grand Rapids: Zondervan, 2009), पृ. 41–54, उत्पत्ति 1-3 में पुरुष-अधिकार को पढ़ लेने के प्रयासों की कमज़ोरी दिखाते हैं।
8. सोलह बार: निर्गमन 18:4; व्यवस्थाविवरण 33:7, 26, 29; भजन संहिता 20:2; 33:20; 70:5; 89:19; 115:9, 10, 11; 121:1, 2; 124:8; 146:5; होशे 13:9। इस अभिव्यक्ति की पृष्ठभूमि के बारे में और जानकारी के लिए देखिए Aída B. Spencer, Beyond the Curse: Women Called to Ministry (Grand Rapids: Baker, 1985), पृ. 23–29।
9. Ludwig Koehler, Walter Baumgartner और Johann Jakob Stamm, Hebrew and Aramaic Lexicon of the Old Testament (आगे HALOT), 5 खंड (Leiden: Brill, 1994–2000), 2 (1995): पृ. 811–812।
10. यशायाह 30:5; यहेजकेल 12:14; दानिय्येल 11:34। Spencer, Beyond the Curse, पृ. 23–29, और विवरण देती हैं।
11. Raymond C. Ortlund Jr. के विपरीत, "Die Gleichheit von Mann und Frau und Das Hauptsein des Mannes – 1. Mose 1-3", Die Rolle von Mann und Frau in der Bibel (Friedberg: 3L-Verlag, 2008) में, पृ. 115–137।
12. या HALOT 2:667-68 के अनुसार "अगुवा, नेता, प्रधान ... अधिकारी ... किसी नगर का महापौर ... दरबारी अधिकारी ... परिवार का मुखिया ... प्रतिष्ठित व्यक्ति ... आराधना-पद्धति का पदाधिकारी ... महायाजक ... अधीक्षक ... प्रधान ... यहोवा द्वारा नियुक्त इस्राएल का अगुवा"। यह इस्राएल पर शाऊल, दाऊद और सुलैमान के शासन के लिए प्रयोग होता है (1 शमूएल 9:16; 13:14; 1 राजाओं 1:35)।
13. Payne, Man and Woman, पृ. 41–54, सृष्टि में पुरुष-अधिकार देखने के प्रयासों की आलोचना करते हैं।
14. **उत्पत्ति की पुस्तक में ऐसा कुछ भी नहीं जो किसी ऐसी "सृष्टि की व्यवस्था" की शिक्षा देता हो जो पुरुष को स्त्री पर अधिकार देती हो।** परमेश्वर ने मनुष्य को पहले सृजे गए पौधों और पशुओं पर प्रभुता दी। यह बात कि परमेश्वर बाद में जन्मे व्यक्ति को अगुवाई सौंपता है, बार-बार दोहराई जाती है और प्राचीन पूर्व की पहलौठे के अधिकार की प्रथा के विरुद्ध है: इश्माएल के ऊपर इसहाक, एसाव के ऊपर याकूब, अपने बड़े भाइयों के ऊपर यूसुफ, हारून के ऊपर मूसा, अपने भाइयों के ऊपर दाऊद, इत्यादि। जब पौलुस कहता है कि स्त्री पुरुष से निकली है (1 कुरिन्थियों 11:8, 12 और अप्रत्यक्ष रूप से 1 तीमुथियुस 2:13 में), तो वह ऐसा उस आदर को दिखाने के लिए करता है जो किसी को अपने मूल के प्रति देना चाहिए, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष (1 कुरिन्थियों 11:3, 12); तुलना कीजिए Payne, Man and Woman, पृ. 113–139, 402-50।
15. John Piper और Wayne Grudem, "Menschlichkeit, Verständlichkeit und Hoffnung - die Kontroverse und die Sache Christi", Die Rolle von Mann und Frau में, पृ. 493–520, यहाँ पृ. 502।
16. George W. Knight III दावा करते हैं कि यह "तानाशाही, प्रेमहीन ढंग से शासन" है ("Die Familie und die Gemeinde: Wie sollte biblisches Mannsein und Frausein in der Praxis aussehen?", Die Rolle von Mann und Frau में, पृ. 417–432); Piper और Grudem दावा करते हैं कि यह "पतित शासन" है, न कि "परमेश्वर द्वारा अभिप्रेत सिर होना" ("Menschlichkeit", पृ. 502), और Wayne Grudem "उस प्रकार के कठोर शासन" की बात करते हैं "जिसकी ओर उत्पत्ति 3:16 संकेत करता है"

(Evangelical Feminism and Biblical Truth [Sisters: Multnomah, 2004], पृ. 123, टिप्पणी 45; तुलना कीजिए पृ. 40, 43)। Grudem को जानना चाहिए कि शब्दकोशीय प्रमाण के बिना इस "शासन" को "कठोर" नहीं कहा जा सकता। क्योंकि दो पृष्ठ पहले (पृ. 38, टिप्पणी 27) वे स्वयं एक भूल स्वीकार करते हैं: उन्होंने शब्दकोशीय प्रमाण के बिना दावा किया था कि उसी पद का एक अन्य शब्द "शत्रुतापूर्ण या आक्रामक लालसा" का अर्थ रखता है।

17. HALOT 2:647–48 और Francis Brown, S. R. Driver और Charles A. Briggs, A Hebrew and English Lexicon of the Old Testament (Oxford: Clarendon, 1906), पृ. 605।
18. जैसे लैव्यव्यवस्था 18:3; 20:23; भजन संहिता 106:35।
19. देखिए Richard Bauckham, Gospel Women: Studies of the Named Women in the Gospels (Grand Rapids: Eerdmans, 2002)।
20. F. F. Bruce, The Acts of the Apostles: The Greek Text with Introduction and Commentary (दूसरा संस्करण; Grand Rapids: Eerdmans, 1952), पृ. 296, बताते हैं कि छद्म-क्लेमेंटीय प्रवचन याकूब को "'बिशपों का बिशप' और यरूशलेम की कलीसिया तथा उन सब कलीसियाओं का प्रधान, जो हर जगह ईश्वरीय विधान से विधिवत स्थापित हुईं", कहते हैं।
21. पौलुस प्रेरित की परिभाषा ऐसे व्यक्ति के रूप में देता है जो जी उठे मसीह से मिला हो (1 कुरिन्थियों 9:1; 15:8; गलातियों 1:1, 15-17), जिसे सुसमाचार सुनाने का काम सौंपा गया हो और जो मिशन-कार्य के परिश्रम और दुख उठाता हो (रोमियों 1:1-5; 1 कुरिन्थियों 1:1; 15:10; यूनिया पौलुस के साथ बंदीगृह में थी, रोमियों 16:7)। यह कार्य फल लाता है (1 कुरिन्थियों 9:1; 15:10) और "चिन्हों, अद्भुत कामों और सामर्थ्य के कामों" से प्रमाणित होता है (2 कुरिन्थियों 12:11-12)। कुछ अनुवाद रोमियों 16:7 में इसे पुरुष-नाम "यूनियास" बना देते हैं। पर प्रमाण भारी बहुमत से स्त्री-नाम "यूनिया" के पक्ष में हैं। **कलीसिया की पहली सहस्राब्दी की सब विश्वसनीय गवाहियाँ एकमत से यूनिया को एक स्त्री मानती हैं।** देखिए Eldon J. Epp का उत्कृष्ट कार्य, Junia: The First Woman Apostle (Minneapolis: Fortress, 2005), पृ. 23–81।
22. यूनानी शब्द **prostatis** ("अगुवा, अध्यक्षा") "पद में आगे" और "खड़ा होना" के शब्दों से मिलकर बना है। नए नियम के संबंधित शब्दों के वे सब अर्थ, जो यहाँ प्रश्न में आते हैं, अगुवाई से संबंधित हैं। तीतुस 3:8, 14 का "किसी बात में रुचि रखना" यहाँ लागू नहीं होता। C. K. Barrett, The Epistle to the Romans (New York: Harper & Row, 1957), पृ. 283, "**संरक्षिका (Patron)**" के रूप में व्याख्या के विरुद्ध तर्क देते हैं, क्योंकि "फीबे पौलुस के साथ इस संबंध में नहीं रही हो सकती (क्योंकि वह स्वतंत्र जन्मा था, प्रेरितों के काम 22:28)।" नया नियम, और सामान्य रूप से यूनानी साहित्य भी, "उपकारक" के विचार या उसके कामों को सामान्यतः दूसरे शब्दों से व्यक्त करता है। ये "अच्छा" और "काम" के प्रचलित यूनानी शब्दों से मिलकर बने हैं। तुलना कीजिए लूका 22:25; प्रेरितों के काम 4:9; 10:38; BDAG 405; LSJ 712; Payne, Man and Woman, पृ. 62–63।
23. विशेष रूप से देखिए Epp, Junia, पृ. 23–44, 69–78, और Bauckham, Gospel Women, पृ. 165–186।
24. इस विषय में देखिए Payne, Man and Woman, पृ. 69–76।
25. Payne, Man and Woman, पृ. 79–104, गलातियों 3:28 के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धर्मवैज्ञानिक और साहित्यिक संदर्भ में 42 कारण बताते हैं, जो दिखाते हैं कि इस पाठ को कलीसिया के जीवन से अलग नहीं किया जा सकता।
26. यूनानी के मानक शब्दकोश (कुछ बाइबलों में प्रयुक्त) अनुवाद "स्वतंत्र" का समर्थन नहीं करते। "स्वतंत्र" उस विरोध को भी व्यक्त नहीं करता जिसकी "तौभी" माँग करता है। और स्वतंत्रता कोई ऐसी बात नहीं जो विशेष रूप से "प्रभु में" लागू होती हो।
27. देखिए Payne, Man and Woman, पृ. 113–215 और Philip B. Payne, "Wild Hair and Gender Equality in 1 Corinthians 11:2–16" (खुले बाल और 1 कुरिन्थियों 11:2-16 में लिंग-समानता), Priscilla Papers 20, अंक 3 (ग्रीष्म 2006): पृ. 9–18।
28. Richard B. Hays, First Corinthians (Louisville: John Knox, 1997), पृ. 131।
29. पदानुक्रम के समर्थक जॉर्ज डब्ल्यू. नाइट तृतीय (George W. Knight III) भी इससे सहमत हैं; देखिए "Ehemänner und Ehefrauen: Eine Parallele zu Christus und der Gemeinde – Epheser 5,21-33 und Kolosser 3,18-19", in Die Rolle von Mann und Frau, पृ. 203–220।
30. Payne, Man and Woman, पृ. 117–137, दिखाते हैं कि यूनानी में "स्रोत" "सिर" (kephale) का एक प्रचलित अर्थ था, पर "अधिकार" या "अगुवा" नहीं।
31. Payne, Man and Woman, पृ. 319–397, इस अनुवाद की सत्यता का बचाव करते हैं।
32. A Greek–English Lexicon of the New Testament and Other Early Christian Literature, तीसरा संस्करण (BDAG)।
33. Henry Scott Baldwin, "An Important Word: αὐθεντέω in 1 Timothy 2:12", in Women in the Church: An Analysis and Application of 1 Timothy 2:9-15 (सं. Andreas J. Köstenberger और Thomas R. Schreiner; दूसरा संस्करण; Grand Rapids: Baker, 2005), पृ. 49–51। **सबसे प्राचीन प्रमाण, जिसमें 2:12 का शब्द स्पष्ट रूप से "अधिकार चलाना" का अर्थ रखता है, लगभग 370 ई. के समय का है (बासिल [Basilius], पत्र 69, पंक्ति 45)। पौलुस के समय में इसका अर्थ या तो "प्रभुत्व जमाना" हो सकता था या "ऐसा अधिकार हथिया लेना" जो मान्य या सौंपा हुआ न था। Payne, Man and Woman, पृ. 361–397, इस क्रिया के प्रयोगों और अर्थों को और 1 तीमुथियुस 2:12 में इसके प्रयोग को प्रलेखित करते हैं।**
34. Philip B. Payne, "1 Tim 2:12 and the Use of οὐδέ to Combine Two Elements to Express a Single Idea", NTS 54 (2008): पृ. 235–253, और Philip B. Payne, "Οὐδέ Combining Two Elements to Convey a Single Idea: Further Insights", in Missing Voices: Broadening the discussion on men, women, and ministry (Minneapolis: Christians for Biblical Equality, 2014), पृ. 24–34।

35. उदाहरण के लिए क्रिसोस्टोम (Chrysostomus), 1 तीमुथियुस 3:2 पर प्रवचन; Grudem, Evangelical Feminism, पृ. 80, जो योसेफ़स (Josephus) और रब्बियों के ग्रंथों को उद्धृत करते हैं। ग्रूडेम (Grudem) ठीक तर्क देते हैं कि "एक स्त्री का पुरुष" "का उद्देश्य किसी अविवाहित पुरुष (जैसे यीशु या पौलुस) को प्राचीन होने से बाहर रखना नहीं है"। इससे अनिवार्य रूप से निकलता है: "एक स्त्री का पुरुष" सब प्राचीनों का वर्णन नहीं कर सकता। यह ग्रूडेम के इस दावे (पृ. 263, टिप्पणी 107) का खंडन करता है कि "एक स्त्री का पुरुष" "हर" सेवक (डीकन) के लिए आवश्यक शर्त है और इसलिए स्त्रियों को बाहर रखता है। ग्रूडेम गलती से "हर" जोड़ देते हैं, जबकि 1 तीमुथियुस 3:12 के यूनानी में ऐसा कोई शब्द नहीं है। Douglas J. Moo, "The Interpretation of 1 Timothy 2:11-15: A Rejoinder", TJ 2 NS (1981): पृ. 198–222, 211, स्वीकार करते हैं कि "एक स्त्री का पुरुष" को "अविवाहित पुरुषों या स्त्रियों को पद से अनिवार्य रूप से बाहर रखना आवश्यक नहीं ... यह दावा करना बहुत आगे जाना होगा कि यह वाक्यांश स्पष्ट रूप से स्त्रियों को बाहर रखता है"। पर उनका इसके बाद का कथन "यह संकेत देता है कि लिखते समय पौलुस के मन में पुरुष थे" केवल एक अर्थ में सही है: पौलुस बहुविवाहियों या विश्वासघाती पुरुषों को बाहर रखने की सोच रहा था। पर वह इस माँग की नहीं सोच रहा था कि सब अध्यक्ष पुरुष हों। **Thomas R. Schreiner**, "Philip Payne on Familiar Ground: A Review of Philip B. Payne, Man and Woman, One in Christ: An Exegetical and Theological Study of Paul's Letters", Journal of Biblical Manhood and Womanhood (वसंत 2010): पृ. 33–46, 35, स्वीकार करते हैं: "**1 तीमुथियुस 3:1-7 और तीतुस 1:6-9 में प्राचीनों की योग्यताएँ, इस कथन समेत कि वे एक-पत्नी वाले पुरुष हों, अपने आप में अनिवार्य रूप से इस बात को बाहर नहीं करतीं कि स्त्रियाँ प्राचीन के रूप में सेवा कर सकें**।"

36. इस सूची में और किसी बात का दोहरा अर्थ नहीं है। तुलना कीजिए Payne, Man and Woman, पृ. 445–459।

37. उदाहरण के लिए उसी कर्ता, "जो कोई" (**tis**), के साथ, जैसे यहाँ: मरकुस 8:34; 9:35; लूका 9:23; 14:25-26; यूहन्ना 7:37-38; 9:31; 11:10; 12:26, 26, 47; 14:23; रोमियों 8:9; 1 कुरिन्थियों 3:12-15; 3:17; 5:11; 8:3, 10; 10:28; 14:24-25; 2 कुरिन्थियों 10:7; गलातियों 6:3-5; 2 थिस्सलुनीकियों 3:14; 1 तीमुथियुस 5:8; 6:3-5; 2 तीमुथियुस 2:21; याकूब 1:5-8; प्रकाशितवाक्य 3:20।

38. Gordon P. Hugenberger, "Women in Church Office: Hermeneutics or Exegesis? A Survey of Approaches to 1 Timothy 2:8–15", JETS 35, no. 3 (1992): पृ. 341–360, 360, टिप्पणी 78।

39. तुलना कीजिए Armin D. Baum, "Paul's Conflicting Statements on Female Public Speaking (1 Cor. 11:5) and Silence (1 Cor. 14:34-35): A New Suggestion", Tyndale Bulletin 65.2 (2014): पृ. 252–271।

40. Gordon D. Fee, The First Epistle to the Corinthians (rev. ed.; NICNT; Grand Rapids: Eerdmans, 2014), पृ. 699; अम्ब्रोसियास्टर (Ambrosiaster) समेत, लगभग 375 ई.।

41. यह पवित्रशास्त्र के मूल पाठ को निर्धारित करने के उस मूल सिद्धांत का प्रयोग है, जो बेंगेल (Bengel) के पहले सिद्धांत के नाम से जाना जाता है। वह कहता है: "वह पाठ, जो अन्य सब पाठों के उत्पन्न होने की सबसे अच्छी व्याख्या करता है, सबसे अधिक संभवतः मूल पाठ है।" देखिए J. C. F. Steudel, सं., Gnomon of the New Testament by John Albert Bengel (अनु. James Bandinel; पुनर्मुद्रण Edinburgh: T. & T. Clark, 1858), खंड 1, पृ. 13–19।

42. बाइबल की त्रुटिहीनता पर शिकागो घोषणा (Chicago Statement on Biblical Inerrancy), अनुच्छेद 10, में लिखा है: "हम पुष्टि करते हैं कि प्रेरणा, कड़े अर्थ में, केवल पवित्रशास्त्र के मूल हस्तलिखित पाठ पर लागू होती है, जिसे परमेश्वर के विधान में उपलब्ध पांडुलिपियों से बड़ी सटीकता के साथ निर्धारित किया जा सकता है। हम आगे पुष्टि करते हैं कि पवित्रशास्त्र की प्रतिलिपियाँ और अनुवाद उसी मात्रा में परमेश्वर का वचन हैं जिस मात्रा में वे मूल को विश्वासयोग्यता से प्रस्तुत करते हैं।" इसी प्रकार अनुच्छेद 6 में लिखा है: "हम पुष्टि करते हैं कि संपूर्ण पवित्रशास्त्र और उसके सब भाग, मूल के शब्दों तक, ईश्वरीय प्रेरणा से दिए गए।" इसलिए यहाँ प्रेरणा की पुष्टि केवल मूल शब्दों के लिए की गई है, बाद के जोड़ों के लिए नहीं।

43. D. B. Wallace, "Reconsidering 'The Story of Jesus and the Adulteress Reconsidered'", NTS 39 (1993): पृ. 290–296; D. A. Carson, The Gospel according to John (PNTC; Grand Rapids: Eerdmans, 1991), पृ. 333, लिखते हैं: "वे [हस्तलिपियाँ], जिनमें यह [यूहन्ना 7:53–8:11] है, पाठ-भेदों की काफ़ी ऊँची आवृत्ति दिखाती हैं। ... स्थानों की विविधता इन पदों के अप्रामाणिक होने की पुष्टि करती है।" पर वही कार्सन (Carson) विरोधाभासी रूप से फ़ी द्वारा उन्हीं सिद्धांतों के 1 कुरिन्थियों 14:34-35 पर प्रयोग को "कमज़ोर और अटकलबाज़ी" कहते हैं: "'Silent in the Churches': On the Role of Women in 1 Corinthians 14:33b–36", in: Recovering Biblical Manhood and Womanhood, पृ. 140–153, यहाँ पृ. 142।

44. दोनों पाठों में उदाहरण के लिए ये बातें मिलती हैं: बहुत-से पाठ-भेद, हस्तलिपियों में अलग-अलग स्थान, पुस्तक के लेखक के लिए असामान्य शब्द-प्रयोग, विचार-क्रम या विषय में व्यवधान, और हाशिये के चिह्न या हाशिया-टिप्पणियाँ, जो दिखाती हैं कि प्रतिलिपिकारों ने पाठ की किसी समस्या को पहचाना था। इसके अतिरिक्त नए नियम की सबसे महत्वपूर्ण हस्तलिपि, कोडेक्स वैटिकनस, दोनों मामलों में पाठ-भेद का एक चिह्न दिखाती है – ठीक उस स्थान पर जहाँ संबंधित अंश आरंभ होता है। Payne, Man and Woman, पृ. 232–256, इन विशेषताओं की व्याख्या करते हैं।

45. यह खंड इस अध्याय के शब्दों को एक पराए, पौलुस से भिन्न अर्थ में प्रयोग करता है। यह पाठ कलीसिया में शिक्षा के उद्देश्य का खंडन करता है। "जैसा व्यवस्था भी कहती है" वाक्यांश पौलुस के धर्मविज्ञान या शैली से मेल नहीं खाता। यह एक कमज़ोर सामाजिक समूह (स्त्रियों) को अधीन करता है, जिसका पौलुस अन्यथा पक्ष लेता है। इसकी शब्दावली 1 तीमुथियुस 2:11-15 के बाद के पाठ से मिलती-जुलती है। 1 कुरिन्थियों में केवल ये पद "कलीसियाओं में" के लोगों को संबोधित हैं। इसके अतिरिक्त यह खंड ऐसे जोड़ के एक स्पष्ट उद्देश्य से मेल खाता है: स्त्रियों को चुप कराना। Payne, Man and Woman, पृ. 257–265, इन विचलनों की व्याख्या करते हैं।

46. Joseph A. Fitzmyer, First Corinthians (New Haven: Yale, 2008), पृ. 500। Kim Haines-Eitzen, The Gendered Palimpsest: Women, Writing, and Representation in Early Christianity (New York: Oxford, 2012), पृ. 62, यह बात

"आज लगभग सब विद्वानों" के विषय में कहती हैं। कम से कम बासठ पाठ-अध्ययन तर्क देते हैं कि यह बाद का जोड़ है। तुलना की-जिए Payne, Man and Woman, पृ. 226–227; इसके कारण पृ. 225–267; Fee, First Corinthians, पृ. 780–792।